नवसर्जन संस्कृति

RNI No. GJHIN/25/A2786
NAVSARJAN SANSKRUTI

नवसर्जन संस्कृति

अहमदाबाद से प्रकाशित दैनिक

वर्ष : 01
अंक : 129
दि. 11.02.2026,
बुधवार
पाना : 04
किंमत : 00.50 पैसा

लोकसभा अध्यक्ष के खिलाफ विपक्ष का अविश्वास प्रस्ताव, 118 सांसदों के हस्ताक्षर के साथ नोटिस सौंपा

(जीएनएस)। नई दिल्ली। राष्ट्रपति के अभिभाषण पर नेता प्रतिपक्ष को बोलने से रोके जाने और आठ विपक्षी सांसदों के निलंबन को लेकर उत्पन्न विवाद अब गंभीर राजनीतिक टकराव में बदल गया है। नाराज विपक्षी दलों ने लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला के खिलाफ अविश्वास प्रस्ताव लाने का औपचारिक नोटिस लोकसभा सचिवालय को सौंप दिया है। इस नोटिस पर 118 सांसदों के हस्ताक्षर हैं। विपक्ष का आरोप है कि सदन की कार्यवाही का संचालन पक्षपातपूर्ण ढंग से किया जा रहा है और विपक्ष की आवाज को व्यवस्थित रूप से दबाया जा रहा है। सदन में कांग्रेस के उपनेता गौरव गोगोई, पार्टी के मुख्य सचेतक कोडिकुनिल सुरेश और सचेतक मोहम्मद जावेद ने अन्य विपक्षी दलों के नेताओं के साथ मिलकर लोकसभा महासचिव उत्पल कुमार सिंह को यह नोटिस सौंपा। नोटिस पर कांग्रेस, समाजवादी पार्टी, डीएमके, राजद समेत कई दलों के सांसदों ने हस्ताक्षर किए हैं, हालांकि तृणमूल कांग्रेस ने इससे दूरी बनाए रखी। लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला ने महासचिव को निर्देश दिया है कि वे नोटिस की नियमों के अनुरूप जांच करें और आवश्यक कार्रवाई करें। सचिवालय की ओर से कहा गया है कि संविधान और लोकसभा नियमावली के तहत निर्धारित प्रक्रिया के अनुसार आगे की कार्रवाई की जाएगी।

गौरव गोगोई ने नोटिस सौंपने के बाद कहा कि यह प्रस्ताव संविधान के अनुच्छेद 94(सी) के तहत दिया गया है। नोटिस में आरोप लगाया गया है कि लोकसभा अध्यक्ष द्वारा कार्यवाही का संचालन निष्पक्ष नहीं है और विपक्ष को पर्याप्त अवसर नहीं दिया जा रहा। विशेष रूप से दो फरवरी को राष्ट्रपति के अभिभाषण पर धन्यवाद प्रस्ताव पर बोलते समय नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी को अपना भाषण पूरा नहीं करने देने की घटना का उल्लेख किया गया है। विपक्ष का कहना है कि यह कोई एकमात्र घटना नहीं है, बल्कि बार-बार ऐसा हो रहा है कि विपक्षी नेताओं को अपनी बात रखने का पूरा अवसर नहीं मिलता।

नोटिस में तीन फरवरी को आठ विपक्षी सांसदों को पूरे बजट सत्र के लिए निलंबित किए जाने के निर्णय को भी चुनौती दी गई है। विपक्ष का आरोप है कि सांसदों को उनके लोकतांत्रिक अधिकारों के प्रयोग के लिए दंडित किया गया। नोटिस में एक भाजपा सांसद द्वारा पूर्व प्रधानमंत्रियों पर की गई कथित आपत्तिजनक टिप्पणियों का अप्रत्यक्ष उल्लेख करते हुए कहा गया है कि ऐसे मामलों में अध्यक्ष की ओर से अपेक्षित हस्तक्षेप नहीं हुआ। इसके अलावा पांच फरवरी को लोकसभा अध्यक्ष द्वारा दिए गए उस बयान का भी हवाला दिया गया है, जिसमें उन्होंने कहा था कि चार फरवरी को कांग्रेस के कुछ सदस्य प्रधानमंत्री की सीट के पास पहुंचकर किसी अप्रत्याशित घटना को अंजाम देना चाहते थे और इसी कारण प्रधानमंत्री सदन में नहीं आए। विपक्ष ने इस बयान को कांग्रेस सदस्यों के खिलाफ झूठा और अपमानजनक बताते हुए इसे संवैधानिक पद के दुरुपयोग का उदाहरण कहा है।

संविधान के अनुच्छेद 94 और लोकसभा के कार्यप्रणाली नियमों के तहत अध्यक्ष को पद से हटाने की प्रक्रिया निर्धारित है। किसी सदस्य को अध्यक्ष या उपाध्यक्ष को हटाने का प्रस्ताव लाने के लिए महासचिव को लिखित नोटिस देना होता है। सचिवालय 14 दिनों के भीतर इसकी जांच करता है। यदि नोटिस नियमानुसार पाया जाता है तो इसे कामकाज की सूची में शामिल किया जाता है और प्रस्ताव पर विचार के लिए दिन तय किया जाता है, जो नोटिस की तारीख से कम से कम 14 दिन बाद का होता है। सदन में प्रस्ताव को आगे बढ़ाने के लिए कम से कम 50 सदस्यों का समर्थन आवश्यक होता है। यदि 50 से कम सदस्य समर्थन में खड़े होते हैं तो प्रस्ताव स्वतः गिर जाता है। प्रस्ताव स्वीकार होने पर दस दिनों के भीतर उस पर चर्चा और मतदान कराया जाता है, जिसमें साधारण बहुमत से निर्णय लिया जाता है।

इतिहास बताता है कि लोकसभा अध्यक्ष को हटाने का कोई भी प्रयास अब तक सफल नहीं हुआ है। 1954 में जीवी मावलंकर, 1966 में हुकम सिंह और 1987 में बलराम जाखड़ के खिलाफ अविश्वास प्रस्ताव लाए गए थे, लेकिन सभी प्रस्ताव बहस के बाद खारिज हो गए। इसके अलावा विभिन्न समयों पर अन्य अध्यक्षों के खिलाफ नोटिस लाने की चर्चा हुई, किंतु प्रस्ताव औपचारिक रूप से आगे नहीं बढ़ पाए।

नियमों के अनुसार, यदि अध्यक्ष के खिलाफ पद से हटाने का प्रस्ताव सदन में विचाराधीन हो तो वे स्वयं सदन की अध्यक्षता नहीं कर सकते। ऐसी स्थिति में पीठासीन सभापतियों की सूची में से कोई सदस्य सदन की कार्यवाही संचालित करता है। सूत्रों के मुताबिक, ओम बिरला ने अपने खिलाफ लाए गए प्रस्ताव पर निर्णय होने तक सदन की कार्यवाही में भाग नहीं लेने का फैसला किया है। इस घटनाक्रम ने संसद के भीतर राजनीतिक तापमान बढ़ा दिया है। जहां विपक्ष इसे लोकतांत्रिक अधिकारों और संसदीय परंपराओं की रक्षा का प्रश्न बता रहा है, वहीं सत्तापक्ष की ओर से अभी आधिकारिक प्रतिक्रिया सामने नहीं आई है। आने वाले दिनों में यह देखना महत्वपूर्ण होगा कि नोटिस पर क्या निर्णय होता है और क्या यह प्रस्ताव सदन में चर्चा और मतदान तक पहुंच पाता है या नहीं।

हर आठ मिनट में एक बच्चा लापता, सुप्रीम कोर्ट ने केंद्र से पूछा—क्या देशभर में सक्रिय है कोई संगठित नेटवर्क?

(जीएनएस)। नई दिल्ली। देश में बच्चों के लगातार लापता होने के मामलों पर सुप्रीम कोर्ट ने गहरी चिंता जताते हुए केंद्र सरकार से कड़े सवाल पूछे हैं। मंगलवार को सुनवाई के दौरान शीर्ष अदालत ने कहा कि यह पता लगाया जाना चाहिए कि बच्चों के गायब होने की घटनाएं केवल अलग-अलग राज्यों की बिखरी हुई घटनाएं हैं या इनके पीछे कोई संगठित राष्ट्रीय नेटवर्क सक्रिय है। अदालत ने केंद्र को निर्देश दिया कि वह सभी राज्यों से विस्तृत आंकड़े एकत्र कर उनका विश्लेषण करे और यह स्पष्ट करे कि इन मामलों में कोई पैटर्न उभर रहा है या नहीं।

न्यायमूर्ति बी.वी. नागरत्ना और न्यायमूर्ति उज्जल भुइयां की पीठ ने कहा कि बच्चों के लापता होने का मुद्दा अत्यंत गंभीर है और इसे सामान्य आपराधिक मामलों की तरह नहीं देखा जा सकता। पीठ ने दो-टूक शब्दों में कहा कि हम यह जानना चाहते हैं कि क्या इन घटनाओं के पीछे राज्य-स्तरीय गिरोह हैं या कोई व्यापक, देशव्यापी नेटवर्क काम कर रहा है। अदालत ने यह भी सुझाव दिया कि जिन बच्चों को अब तक बचाया गया है, उनसे विस्तार से पूछताछ कर यह समझने की कोशिश की जाए कि उन्हें कहां और किन परिस्थितियों में रखा गया था तथा इसके पीछे कौन लोग शामिल थे।

केंद्र सरकार की ओर से अतिरिक्त सॉलिसिटर जनरल ऐश्वर्या भाटी ने अदालत को बताया कि कुछ राज्यों ने लापता बच्चों और अभियोजन से जुड़े आंकड़े सौंप दिए हैं, लेकिन लगभग एक दर्जन राज्यों ने अभी तक पूरा डेटा उपलब्ध नहीं कराया है। उन्होंने कहा कि जब तक सभी राज्यों से संपूर्ण जानकारी प्राप्त नहीं हो जाती, तब तक किसी ठोस निष्कर्ष पर पहुंचना कठिन है। इस पर पीठ ने नाराजगी जताते हुए कहा कि राज्यों द्वारा डेटा उपलब्ध कराने में ढिलाई बर्दाश्त नहीं की जाएगी और आवश्यकता पड़ने पर सख्त आदेश जारी किए जा सकते हैं।

यह सुनवाई एनजीओ 'गुरिया स्वयंसेवी संस्थान' द्वारा दायर जनहित याचिका पर हो रही थी। याचिका में आरोप लगाया गया है कि कई राज्यों में बड़ी संख्या में बच्चे वर्षों से लापता हैं और उनकी तलाश तथा जांच में अपेक्षित गंभीरता नहीं दिखाई गई। वरिष्ठ अधिवक्ता अपर्णा भट्ट ने अदालत को बताया कि केंद्र ने कुछ कदम उठाए हैं, लेकिन सभी राज्यों को स्पष्ट और बाध्यकारी निर्देश दिए जाने की आवश्यकता है, ताकि राष्ट्रीय स्तर पर एक समन्वित तंत्र विकसित किया जा सके।

सुप्रीम कोर्ट पहले भी इस मुद्दे पर चिंता जता चुका है। नौ दिसंबर को अदालत ने केंद्र को निर्देश दिया था कि वह पिछले छह वर्षों में लापता हुए बच्चों का राष्ट्रीय स्तर का समेकित डेटा पेश करे और गृह मंत्रालय में एक नोडल अधिकारी नियुक्त करे, जो राज्यों के साथ समन्वय कर कार्रवाई सुनिश्चित करे। इससे पहले 18 नवंबर की सुनवाई में अदालत ने एक रिपोर्ट का हवाला देते हुए कहा था कि देश में औसतन हर आठ मिनट में एक बच्चा लापता हो जाता है। अदालत ने इसे अत्यंत गंभीर स्थिति बताते हुए कहा था कि यह केवल कानून-व्यवस्था का नहीं, बल्कि सामाजिक और प्रशासनिक तंत्र की विफलता का भी संकेत हो सकता है। अदालत ने यह भी टिप्पणी की थी कि दत्तक ग्रहण की जटिल और लंबी प्रक्रिया के कारण कुछ लोग अवैध तरीकों की ओर रुख कर लेते हैं, जिससे बच्चों की तस्करी जैसे अपराधों को बढ़ावा मिल सकता है। याचिका में उत्तर प्रदेश के पांच मामलों का विशेष उल्लेख किया गया है, जहां नाबालिग बच्चों का अपहरण कर उन्हें झारखंड, मध्य प्रदेश और राजस्थान जैसे राज्यों में कथित रूप से एक संगठित नेटवर्क के जरिए भेजा गया। इन उदाहरणों ने अदालत की चिंता और बढ़ा दी है। सुप्रीम कोर्ट ने स्पष्ट किया कि बच्चों की सुरक्षा सर्वोच्च प्राथमिकता होनी चाहिए और यदि किसी प्रकार का संगठित नेटवर्क सक्रिय है, तो उसे जड़ से खत्म करने के लिए समन्वित राष्ट्रीय रणनीति तैयार की जानी चाहिए। अदालत ने संकेत दिया कि अगली सुनवाई में वह राज्यों से प्राप्त आंकड़ों और केंद्र की रिपोर्ट के आधार पर आगे की दिशा तय करेगी। देश में हर आठ मिनट में एक बच्चे के लापता होने की आशंका ने न्यायपालिका को सक्रिय कर दिया है और अब निगाहें इस बात पर टिकी हैं कि केंद्र और राज्य सरकारें इस गंभीर समस्या से निपटने के लिए क्या ठोस कदम उठाती हैं।

बैंक ऑफ बड़ौदा ने कार लोन ब्याज दरों में 30 बीपीएस की कटौती की, 7.60% से शुरू नई दरें लागू

(जीएनएस)। सूरत, 10 फरवरी 2026। भारत के अग्रणी अंतर्राष्ट्रीय सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक, बैंक ऑफ बड़ौदा ने ग्राहकों को राहत देते हुए अपने कार लोन की ब्याज दरों में 30 बेसिस पॉइंट्स (बीपीएस) की कटौती की घोषणा की है। नई दरें तत्काल प्रभाव से लागू कर दी गई हैं। इस फैसले के साथ बैंक ने ऑटो फाइनेंसिंग सेगमेंट में प्रतिस्पर्धा को और तेज कर दिया है तथा कार खरीदने की योजना बना रहे ग्राहकों को किफायती विकल्प उपलब्ध कराया है। कटौती के बाद बैंक की अनियत (फ्लोटिंग) ब्याज दर अब 7.60 प्रतिशत प्रति वर्ष से शुरू होगी, जो पहले 7.90 प्रतिशत प्रति वर्ष थी। इसके अलावा बैंक 8.50 प्रतिशत प्रति वर्ष से शुरू होने वाली आकर्षक नियत (फिक्स्ड) ब्याज दर पर भी बड़ौदा कार लोन की पेशकश कर रहा है। 7.60 प्रतिशत की शुरुआती दर नई कार खरीदने पर उपलब्ध होगी और यह उधारकर्ता की क्रेडिट प्रोफाइल से लिंक्ड रहेगी। बेहतर क्रेडिट स्कोर वाले ग्राहकों को अधिक प्रतिस्पर्धी दरों का लाभ मिल सकेगा।

बैंक ने ब्याज दरों में कटौती के साथ-साथ ग्राहकों को अतिरिक्त सुविधाएं भी प्रदान की हैं। व्यक्ति उधारकर्ताओं के लिए अनियत ब्याज दर पर लिए गए कार लोन में समय पूर्व चुकौती या आंशिक पूर्व-चुकौती पर कोई प्रभार नहीं लिया जाएगा। यह सुविधा उन ग्राहकों के लिए विशेष रूप से लाभकारी होगी, जो अपनी आय में सुधार या अतिरिक्त धनराशि मिलने पर ऋण का बोझ कम करना चाहते हैं।

बड़ौदा कार लोन की एक और महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि नियत और अनियत दोनों प्रकार के ऋणों पर ब्याज की गणना 'दैनिक घटते शेष' पद्धति के आधार पर की जाती है। इससे ग्राहकों को वास्तविक बकाया राशि पर ही ब्याज देना पड़ता है, जिससे कुल ब्याज भार कम होता है और ऋण अधिक किफायती बनता है। बैंक अधिकतम 84 महीनों तक की विस्तारित चुकौती अवधि भी प्रदान कर रहा है, जिससे ग्राहकों को अपनी मासिक किस्तों को सुविधानुसार व्यवस्थित करने में मदद मिलेगी।

इस घोषणा पर प्रतिक्रिया देते हुए बैंक ऑफ बड़ौदा के कार्यपालक निदेशक श्री संजय वी. मुदालियर ने कहा कि कार लोन की ब्याज दरों में कमी बैंक को बाजार के सबसे प्रतिस्पर्धी बैंकों में से एक बनाती है। उन्होंने कहा कि यह कदम उपभोक्ताओं को सुलभ और किफायती ऋण उपलब्ध कराने की दिशा में बैंक की प्रतिबद्धता को दर्शाता है। उन्होंने आगे कहा कि बैंक देशभर के कार खरीदारों की बढ़ती आकांक्षाओं को पूरा करने के लिए ग्राहक-केंद्रित और डिजिटल रूप से सक्षम वित्तीय समाधान प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है।

ग्राहक बैंक ऑफ बड़ौदा की आधिकारिक वेबसाइट, बॉब वर्ल्ड मोबाइल ऐप के डिजिटल लेंडिंग प्लेटफॉर्म या देशभर में स्थित किसी भी शाखा के माध्यम से आसानी से बड़ौदा कार लोन के लिए आवेदन कर सकते हैं। बैंक का 'बड़ौदा डिजिटल कार लोन' कुछ ही चरणों में त्वरित स्वीकृति की सुविधा देता है, जिससे पूरी प्रक्रिया सरल और पारदर्शी बनती है।

नई ब्याज दरों और सुविधाओं के साथ बैंक ऑफ बड़ौदा ने स्पष्ट संकेत दिया है कि वह ऑटो लोन सेगमेंट में अपनी मजबूत उपस्थिति बनाए रखने के साथ-साथ ग्राहकों को अधिक लचीले और प्रतिस्पर्धी वित्तीय विकल्प उपलब्ध कराने के लिए प्रतिबद्ध है।

आधुनिक उद्योगों की धड़कन को करीब से महसूस करता चैंबर का औद्योगिक दौरा, 3D टेक्नोलॉजी और अत्याधुनिक मशीनरी ने खोले विकास के नए द्वार

(जीएनएस)। सूरत। तेजी से बदलती औद्योगिक दुनिया में प्रतिस्पर्धा केवल उत्पादन तक सीमित नहीं रह गई है, बल्कि तकनीक, गुणवत्ता, नवाचार और प्रबंधन की समग्र समझ ही सफलता की असली कुंजी बन चुकी है। इसी सोच को साकार रूप देने के उद्देश्य से सदर्न गुजरात चैंबर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री की इंडस्ट्रियल टूर कमेटी ने जनवरी 2026 में एक व्यापक औद्योगिक दौरे का आयोजन किया। चेयरमैन अरविंद बाबावाला और को-चेयरमैन चेतन सेठ के नेतृत्व में चैंबर सदस्यों का एक प्रतिनिधिमंडल शहर और क्षेत्र की प्रतिष्ठित औद्योगिक इकाइयों तक पहुंचा, जहां उन्होंने आधुनिक मशीनरी, उन्नत तकनीकों और सुव्यवस्थित उत्पादन प्रक्रियाओं को नजदीक से देखा और समझा।

इस औद्योगिक यात्रा की शुरुआत 13 जनवरी 2026 को पद्मा पल्स प्रोसेसर्स प्राइवेट लिमिटेड से हुई। यहां दाल प्रोसेसिंग उद्योग में हो रहे तकनीकी परिवर्तन और स्वचालित मशीनरी की कार्यप्रणाली ने प्रतिनिधियों को विशेष रूप से प्रभावित किया। कच्चे माल की सफाई से लेकर ग्रेडिंग, पॉलिशिंग, पैकेजिंग और निर्यात तक की पूरी प्रक्रिया को वैज्ञानिक तरीके से संचालित किया जा रहा था। क्वालिटी कंट्रोल के लिए अपनाई गई बहु-स्तरीय जांच प्रणाली, आधुनिक प्रयोगशालाएं और स्वच्छता के सख्त मानकों ने यह स्पष्ट किया कि वैश्विक बाजार में प्रतिस्पर्धा के लिए गुणवत्ता से कोई समझौता संभव नहीं है। स्टोरेज मैनेजमेंट की सुव्यवस्थित व्यवस्था और एक्सपोर्ट डॉक्यूमेंटेशन की पारदर्शी प्रक्रिया ने उद्योग संचालन के व्यावहारिक पक्ष को भी उजागर किया।

उसी दिन प्रतिनिधिमंडल ने बालाजी एग्रो प्रोडक्ट्स प्राइवेट लिमिटेड का भी दौरा किया, जहां एग्रो-बेस्ड उत्पादों की प्रोसेसिंग और पैकेजिंग की आधुनिक तकनीकों को देखा गया। यहां कच्चे कृषि उत्पादों को मूल्यवर्धित उत्पादों में बदलने की पूरी श्रृंखला का प्रदर्शन किया गया। सप्लाई चेन मैनेजमेंट को डिजिटल प्लेटफॉर्म से जोड़ा गया है, जिससे उत्पादन से लेकर वितरण तक हर चरण पर निगरानी संभव हो पाती है। मार्केटिंग रणनीतियों में ब्रांडिंग, अंतरराष्ट्रीय मानकों का पालन और उपभोक्ता व्यवहार के विश्लेषण को विशेष महत्व दिया जा रहा है। इंडस्ट्री एक्सपर्ट्स ने बदलते बाजार, कच्चे माल की उपलब्धता, लागत प्रबंधन और वैश्विक प्रतिस्पर्धा जैसी चुनौतियों पर भी विस्तार से चर्चा की। साथ ही यह भी बताया गया कि नवाचार और तकनीकी उन्नयन के माध्यम से इन चुनौतियों को अवसरों में बदला जा सकता है।

जनवरी के अंतिम सप्ताह में, 28 जनवरी 2026 को चैंबर डेलीगेशन ने सहजानंद टेक्नोलॉजीज प्राइवेट लिमिटेड और 3D एक्सीलेंस सेंटर का दौरा किया, जहां औद्योगिक भविष्य की झलक स्पष्ट रूप से दिखाई दी। एडवांस्ड मैन्युफैक्चरिंग टेक्नोलॉजी, 3D डिजाइनिंग, प्रोटोटाइप डेवलपमेंट और ऑटोमेशन से जुड़े इनोवेटिव सॉल्यूशंस पर विस्तृत प्रस्तुति दी गई। इंडस्ट्री 4.0 की अवधारणा के तहत मशीनों और सॉफ्टवेयर के एकीकरण, डेटा एनालिटिक्स, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और स्मार्ट फैक्ट्री मॉडल की कार्यप्रणाली ने उपस्थित उद्यमियों को नई दिशा में सोचने के लिए प्रेरित किया। 3D प्रिंटिंग तकनीक के माध्यम से कम समय और कम लागत में सटीक प्रोटोटाइप तैयार करने की प्रक्रिया ने विशेष आकर्षण पैदा किया। इससे यह स्पष्ट हुआ कि आने वाला समय उन उद्योगों का होगा जो तकनीक को शीघ्रता से अपनाकर अपनी उत्पादन प्रणाली को अधिक लचीला, कुशल और प्रतिस्पर्धी बनाएंगे।

चैंबर ऑफ कॉमर्स के प्रेसिडेंट निखिल मद्रासी ने इस अवसर पर कहा कि इस प्रकार के औद्योगिक दौरे केवल औपचारिक कार्यक्रम नहीं होते, बल्कि यह ज्ञान, अनुभव और प्रेरणा का सशक्त माध्यम हैं। इन विज़िट्स से उद्योगपतियों और युवा उद्यमियों को व्यावहारिक जानकारी मिलती है, जिससे वे अपने व्यवसाय में नई तकनीकों और बेहतर प्रबंधन प्रणालियों को लागू करने के लिए प्रेरित होते हैं। उन्होंने कहा कि उद्योगों के बीच संवाद और सहयोग की भावना को मजबूत करना समय की आवश्यकता है, क्योंकि साझा अनुभव और सामूहिक प्रयास ही क्षेत्रीय औद्योगिक विकास को नई ऊंचाइयों तक ले जा सकते हैं।

इस औद्योगिक यात्रा ने यह संदेश दिया कि सूरत और दक्षिण गुजरात का उद्योग जगत केवल परंपरागत उत्पादन तक सीमित नहीं है, बल्कि वह आधुनिक तकनीक, गुणवत्ता नियंत्रण और वैश्विक मानकों को अपनाकर तेजी से आगे बढ़ रहा है। चैंबर द्वारा आयोजित यह पहल न केवल सदस्यों के लिए ज्ञानवर्धक साबित हुई, बल्कि क्षेत्रीय औद्योगिक विकास की दिशा में एक मजबूत कदम भी सिद्ध हुई। भविष्य में भी इस तरह के उपयोगी और प्रेरणादायक कार्यक्रमों के माध्यम से उद्योग और तकनीक के बीच सेतु बनाने का प्रयास निरंतर जारी रहेगा।

संपादकीय

भागवत का 'हिंदू पुराण'

सरसंघचालक मोहन भागवत का 'हिंदू' विषय पर बार-बार बोलना महज़ संयोग नहीं है, बल्कि यह राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की वैचारिक यात्रा का स्वाभाविक विस्तार है। संघ की स्थापना से ही 'हिंदू' को केवल एक धार्मिक पहचान नहीं, बल्कि एक सभ्यतागत, सांस्कृतिक और ऐतिहासिक चेतना के रूप में परिभाषित किया जाता रहा है। भागवत भी उसी परंपरा में खड़े दिखाई देते हैं। उनका यह कहना कि भारत का हर नागरिक आत्मा और मूल चेतना के स्तर पर 'हिंदू' है, इस बात का संकेत है कि संघ 'हिंदू' शब्द को पूजा-पद्धति या मजहबी आस्था तक सीमित नहीं रखना चाहता, बल्कि उसे जीवन-दर्शन और सांस्कृतिक पहचान के रूप में स्थापित करना चाहता है। इसी बिंदु पर बहस शुरू होती है और यहीं से असहमति के स्वर भी तेज़ होते हैं।

भागवत का तर्क यह है कि मुसलमान, ईसाई, पारसी, यहूदी जैसे समुदायों की पूजा-पद्धतियाँ भले अलग हों, लेकिन वे उसी धरती, उसी सभ्यता और उसी सांस्कृतिक प्रवाह से निकले हैं, जिसे संघ 'हिंदू' कहता है। इस दृष्टि से देखें तो यह विचार समावेशी प्रतीत होता है, क्योंकि इसमें किसी को बाहर नहीं किया जा रहा। उलटे, सभी को एक बड़े सांस्कृतिक छाते के नीचे लाने की कोशिश है। 'विविधता में एकता' की भारतीय अवधारणा भी इसी विचार से मेल खाती है। भारत में सदियों से अलग-अलग मत, पंथ, दर्शन और आस्थाएँ साथ-साथ पनपती रही हैं। किसी ने किसी को पूरी तरह मिटाने की कोशिश नहीं की, बल्कि सह-अस्तित्व का रास्ता चुना गया। इस अर्थ में भागवत का कथन भारतीय परंपरा के अनुरूप ही लगता है। लेकिन समस्या तब पैदा होती है, जब 'हिंदू' की इस व्यापक परिभाषा के भीतर भी वर्गीकरण किया जाता है। भागवत द्वारा बताए गए 'चार प्रकार के हिंदू' इसीलिए विवाद का विषय बने। आध्यात्मिकता और सांस्कृतिक चेतना को प्रकारों में बाँटना न केवल व्यावहारिक कठिनाइयाँ पैदा करता है, बल्कि उस मूल भावना के भी विरुद्ध जाता है, जिसे 'विविधता में एकता' कहा जाता है। जो हिंदू है, वह हिंदू है—चाहे वह मंदिर जाए या न जाए, पूजा-पाठ करे या न करे, ईश्वर को साकार माने या निराकार, आस्तिक हो या नास्तिक। भारतीय दर्शन में नास्तिकता भी एक मान्य धारा रही है। सांख्य, चार्वाक, बौद्ध और जैन दर्शन इसकी मिसाल हैं। ऐसे में हिंदू होने की कसौटी कर्मकांड या धार्मिक आचरण को बना देना, हिंदू विचार की व्यापकता को संकुचित करना है। इतिहास गवाह है कि भारत में ऐसे असंख्य हिंदू विद्वान, मनीषी, वैज्ञानिक और समाज सुधारक हुए हैं, जो मंदिर-मठों से दूर रहे, जिन्होंने ईश्वर की पारंपरिक अवधारणा पर प्रश्न उठाए, लेकिन प्रकृति, ब्रह्म और ऊर्जा की किसी न किसी शक्ति को स्वीकार किया। उनकी व्याख्याएँ अलग थीं, मगर वे भारतीय चिंतन की मुख्यधारा से बाहर नहीं थे। आर्य समाज की स्थापना भी इसी प्रश्न से उपजी थी कि क्या 33 करोड़ देवी-देवताओं की अवधारणा ही हिंदू धर्म का अंतिम सत्य है। स्वामी दयानंद सरस्वती ने वेदों की ओर लौटने का आह्वान किया और मूर्ति पूजा का विरोध किया, फिर भी उन्हें हिंदू समाज का ही एक महत्वपूर्ण सुधारक माना गया। इसका अर्थ यह है कि हिंदू सोच किसी एक 'थीसिस' से बंधी नहीं रही, बल्कि समय-समय पर नए प्रश्नों और नए उत्तरों के साथ विकसित होती रही। 'गर्व से कहो हम हिंदू हैं' का नारा अपेक्षाकृत नया है और उसका राजनीतिक संदर्भ अधिक स्पष्ट है। राम मंदिर आंदोलन के दौरान यह नारा एक पहचान और प्रतिरोध का प्रतीक बन गया। संघ, भाजपा, विहिप और बजरंग दल से जुड़े लोगों ने इसे राजनीतिक mobilization के औज़ार के रूप में इस्तेमाल किया। इसमें गर्व की भावना है, लेकिन साथ ही एक प्रकार की आक्रामकता भी दिखाई देती है, जो कई बार समावेशी सोच से टकराती है। भारत में जैन, बौद्ध और सिख जैसे समुदायों की धार्मिक पहचान अलग है, फिर भी ऐतिहासिक और संवैधानिक दस्तावेज़ों में उन्हें लंबे समय तक 'हिंदू' की व्यापक श्रेणी में रखा गया। दलित, आदिवासी और ओबीसी समुदाय भी इसी समाज का हिस्सा हैं। प्रश्न यह नहीं है कि वे हिंदू हैं या नहीं, बल्कि यह है कि 'हिंदू' होने की परिभाषा कौन तय करेगा और किस आधार पर। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का उदाहरण इस बहस को और जटिल बनाता है। वे ओबीसी पृष्ठभूमि से आते हैं और व्यक्तिगत जीवन में धार्मिक आचरण के प्रति अत्यंत प्रतिबद्ध दिखाई देते हैं। उनकी सार्वजनिक छवि एक कर्मकांडी, आस्थावान हिंदू की है। लेकिन क्या हिंदू होने का यही एक मानक है? यदि ऐसा है, तो वे लोग कहाँ खड़े होंगे, जो सामाजिक सेवा, विज्ञान, साहित्य या दर्शन के माध्यम से भारतीय चेतना को समृद्ध करते हैं, लेकिन धार्मिक कर्मकांडों से दूरी बनाए रखते हैं? हिंदू समाज की ताकत इसी बहुलता में रही है कि उसने अलग-अलग रास्तों को स्वीकार किया।

फिर दोराहे पर खड़ा बांग्लादेश

"लंदन में 17 वर्षों के निर्वासन के बाद खालिदा जिया के पुत्र तारिक रहमान ने बीएनपी की कमान संभाली है। पिछले साल 25 दिसंबर को उनकी बांग्लादेश वापसी के दौरान उमड़ी भीड़ से स्पष्ट हुआ कि 2024 के आंदोलन का राजनीतिक लाभ बीएनपी को मिला है और आगामी चुनावों में उससे काफी उम्मीदें हैं।"

बांग्लादेश में 12 फरवरी को होने जा रहे आम चुनावों के लिए सभी राजनीतिक दल अपनी-अपनी कमर कस चुके हैं। चुनावी परिणाम ही नए बांग्लादेश की दिशा निर्धारित करेंगे। इस बार अवामी लीग प्रतिबंध के कारण चुनाव से बाहर है, लेकिन पूर्व प्रधानमंत्री शेख हसीना फिर भी चुनावी विमर्श का प्रमुख मुद्दा बनी हुई हैं। पिछले तीन दशकों में यह पहला अवसर है, जब बांग्लादेश की 'दो बेगमों'- अवामी लीग की शेख हसीना और बांग्लादेश नेशनलिस्ट पार्टी (बीएनपी) की खालिदा जिया चुनावी मैदान में नहीं हैं।

ऐसे में यह चुनाव नए राजनीतिक समीकरणों के बीच लड़ा जा रहा है। 13वें संसदीय चुनाव में युवाओं की भूमिका विशेष रूप से महत्वपूर्ण मानी जा रही है, क्योंकि 2024 में जुलाई में शेख हसीना के खिलाफ हुए आंदोलन और उनके इस्तीफे में यही वर्ग सबसे आगे रहा। वर्तमान में 18-35 आयु वर्ग की आबादी लगभग 30 प्रतिशत है, जो आधुनिक तकनीक और सोशल मीडिया से लैस है और जुलाई आंदोलन का प्रमुख प्रतिनिधि मानी जाती है। सवाल यह है कि क्या यह युवा वर्ग छात्र आंदोलन से उभरी जातीय नागरिक पार्टी यानी नेशनल सिटिजंस पार्टी (एनसीपी) को समर्थन देगा या पारंपरिक दल अपने प्रशासनिक अनुभव और संगठनात्मक मजबूती के बल पर फिर सत्ता में लौटेंगे?

लंदन में 17 वर्षों के निर्वासन के बाद खालिदा जिया के पुत्र तारिक रहमान ने बीएनपी की कमान संभाली है। पिछले साल 25 दिसंबर को उनकी बांग्लादेश वापसी के दौरान उमड़ी भीड़ से स्पष्ट हुआ कि 2024 के आंदोलन का राजनीतिक लाभ बीएनपी को मिला है और आगामी चुनावों में उससे काफी उम्मीदें हैं। ढाका पहुंचने पर तारिक रहमान ने कहा, 'आइ हैव ए प्लान यानी मेरे पास बांग्लादेश के विकास की योजना है।' इसी आधार पर पार्टी ने अपने घोषणा पत्र सबसे पहले राष्ट्रीय बदलाव, सामाजिक समानता, आर्थिक स्थिरता, क्षेत्रीय विकास और धार्मिक सौहार्द जैसे मुद्दों को प्रमुखता दी है। बांग्लादेश के चुनावी इतिहास में मुद्दों से अधिक पार्टी और नेतृत्व का प्रभाव रहा है और तारिक रहमान ने पिछले डेढ़ वर्षों में इसी दिशा में काम किया है। विदेश में रहते हुए भी वे आनलाइन माध्यम से पार्टी से जुड़े रहे। चुनावी गणित के लिहाज से बीएनपी इस समय एक मजबूत पार्टी मानी जा रही है, जिसे अवामी लीग की अनुपस्थिति का भी लाभ मिल सकता है। हालांकि बीएनपी मजहबी ध्रुवीकरण से बचते हुए अल्पसंख्यक और अवामी लीग समर्थक वोटों को आकर्षित करने की कोशिश कर रही है।

जमात-ए-इस्लामी पहली बार खुलकर नेतृत्व की राजनीति में सामने आई है। 1971 के मुक्ति आंदोलन में पाकिस्तान का साथ देने के कारण यह संगठन लंबे समय तक विवादों में रहा। शेख हसीना के दो दशकों के शासन में इसके कई नेता जेल में रहे या भूमिगत हो गए थे, लेकिन उनकी सरकार के पतन के बाद जमात फिर सक्रिय हुई और उसका नेतृत्व सामने आया, जिसमें प्रमुख अमीर शफीकुर रहमान शामिल हैं। अवामी लीग की अनुपस्थिति ने जमात को अलग राजनीतिक पहचान दी है और अपने मजहबी आधार के सहारे वह चुनावी मैदान में उतरी है। हालांकि जमात के सामने चुनौतियां भी कम नहीं हैं। उसकी कट्टरपंथी छवि, महिलाओं के प्रति भेदभावपूर्ण दृष्टिकोण और संविधान को इस्लामी स्वरूप देने की कोशिशें चिंता का विषय हैं।

बांग्लादेश की स्थापना उदारवाद, धार्मिक सद्भाव और महिलाओं की सक्रिय भूमिका के आधार पर हुई थी। ऐसे में यदि जमात सत्ता में आती है, तो पंथनिरपेक्षता के भविष्य पर प्रश्नचिह्न लग सकते हैं। हाल में शफीकुर रहमान के एक साक्षात्कार में महिलाओं को पार्टी में प्रतिनिधित्व न देने की बात भी चिंता बढ़ाती है। जुलाई आंदोलन के कारण युवाओं की भूमिका इस चुनाव में अहम मानी जा रही है। छात्र नेता नाहिद इस्लाम ने फरवरी 2025 में एनसीपी की स्थापना कर चुनावी राजनीति में प्रवेश किया।

हालांकि छात्र आंदोलन का नेतृत्व चुनावी सफलता की गारंटी नहीं होता। एनसीपी ने ढाका और जहांगीरनगर विश्वविद्यालय के छात्र चुनावों में भाग नहीं लिया, जिससे उसकी संगठनात्मक मजबूती पर सवाल उठे। इसके विपरीत, जमात के छात्र संगठन इस्लामी छात्र शिबिर की जीत ने उसकी जमीनी पकड़ को दर्शाया। एनसीपी का जमात के साथ गठबंधन उसकी राजनीतिक अनिश्चितता और अवसरवाद को भी दर्शाता है। अब यह देखना होगा कि युवा, विशेषकर महिलाएं इस गठबंधन को कितना स्वीकार करती हैं।

आंतरिक मुद्दों के बीच बीएनपी, जमात और एनसीपी, तीनों ने भारत के साथ संबंधों पर अलग-अलग रुख अपनाया है। बीएनपी और जमात ने विदेश नीति पर अपेक्षाकृत संयम बरता है, जबकि एनसीपी ने अंतरराष्ट्रीय नदियों के जल बंटवारे, शेख हसीना की वापसी और असमान द्विपक्षीय समझौतों जैसे मुद्दों पर कड़ा रुख अपनाने की बात कही है। पारंपरिक दलों की चुप्पी को विवाद से बचने की रणनीति माना जा सकता है।

बांग्लादेश कई बार राजनीतिक उथल-पुथल से गुजरा है, लेकिन उसका राजनीतिक ढांचा कायम रहा है। यदि इस चुनाव में जमात सत्ता में आती है, तो न केवल आंतरिक राजनीति, बल्कि विदेश नीति में भी मजहबी प्रभाव बढ़ सकता है, जो भारत के लिए गंभीर चिंता का विषय बन सकता है।

प्रेरणा

कर्तव्य की कीमत चुकाता एक साधारण सैनिक

युद्ध समाप्त हो चुका था, लेकिन सैनिक जीवन में युद्ध का अंत कभी पूर्ण शांति नहीं लाता। मैदान भले शांत हो जाए, पर अनुशासन, चौकसी और जिम्मेदारी का बोझ सैनिकों के कंधों से उतरता नहीं। ऐसे ही वातावरण में सिपाही विलियम स्कॉट अपनी सेवा निभा रहा था। वह दिनभर की कठोर ड्यूटी के बाद बेहद थक चुका था। शरीर जवाब देने लगा था, आँखें बोझिल थीं, लेकिन सैनिक होने का अर्थ ही यही था कि निजी थकान से ऊपर कर्तव्य रखा जाए। उसी रात उसके एक साथी सैनिक ने अस्वस्थता के कारण पहरे पर जाने में असमर्थता जताई। बिना किसी आदेश, बिना किसी चर्चा के विलियम ने उसका स्थान लेने का निश्चय कर लिया। यह निर्णय किसी वीरता प्रदर्शन के लिए नहीं था, बल्कि उस मौन भाईचारे का हिस्सा था, जो सैनिकों के बीच अनकहा लेकिन गहरा होता है।

रात आगे बढ़ती गई। चारों ओर गहरी खामोशी थी। ठंडी हवा शरीर में सिहरन पैदा कर रही थी। विलियम अपनी पूरी कोशिश कर रहा था कि वह सतर्क बना रहे। उसने बार-बार खुद को झकझोरा, पैर बदले, सांस को तेज किया, लेकिन लगातार ड्यूटी और मानसिक दबाव ने उसे तोड़ दिया। कब उसकी आँखें बंद हो गईं, उसे खुद पता नहीं चला। वह खड़े-खड़े नींद में चला गया। ठीक उसी समय एक वरिष्ठ अधिकारी निरीक्षण के लिए वहाँ पहुँचा। सैन्य व्यवस्था में पहरे पर सोना केवल लापरवाही नहीं, बल्कि संभावित खतरे को न्योता देना माना जाता है। अधिकारी ने विलियम को उसी अवस्था में पकड़ लिया। न उसकी थकान देखी गई, न उसके इरादे, न यह तथ्य कि वह अपने साथी के लिए ड्यूटी पर खड़ा था। नियमों के सामने भावनाओं की कोई जगह नहीं थी। विलियम को गिरफ्तार कर लिया गया। सैन्य न्यायालय में मामला पहुँचा। गवाह पेश हुए, नियम पढ़े गए और फैसला सुनाया गया। निर्णय कठोर था—प्राणदंड। यह सुनते ही विलियम के भीतर सब कुछ जैसे ठहर गया। उसे विश्वास ही नहीं हो रहा था कि एक छोटी-सी चूक, वह भी कर्तव्य निभाते हुए, उसकी जान ले लेगी। जेल की कोठरी में बैठा वह अपने जीवन के बारे में सोचता रहा—परिवार, भविष्य और वह सम्मान, जो एक सैनिक के लिए जीवन से भी बड़ा होता है। संयोग से यह खबर राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन तक पहुँची। लिंकन युद्धकालीन राष्ट्रपति थे, जिन्होंने देश की एकता और सैनिकों के बलिदान को बहुत नजदीक से देखा था। यह मामला उन्हें सामान्य नहीं लगा। उन्होंने महसूस किया कि यहाँ केवल कानून का नहीं, बल्कि विवेक का भी प्रश्न है। उन्होंने स्वयं उस सैनिक से मिलने का निर्णय लिया, जिसे मृत्यु की सज़ा सुनाई जा चुकी थी। राष्ट्रपति का जेल आना अपने आप में असाधारण घटना थी।

जब विलियम ने राष्ट्रपति लिंकन को अपनी ओर आते देखा, तो उसकी आंखों से आंसू बह निकले। उसे लगा कि शायद ईश्वर ने उसकी सुन ली है। वह राष्ट्रपति के पैरों में गिर पड़ा। लिंकन ने उसे उठाया और शांत, लेकिन दृढ़ स्वर में कहा कि वे उसकी सज़ा माफ करवा सकते हैं, मगर इसके बदले उसे एक कर्ज चुकाना होगा। यह सुनकर विलियम घबरा गया। उसके मन में पहला विचार यही आया कि यह आर्थिक दंड होगा। उसने तुरंत कहा कि वह अपनी जान के बदले घर-बार बेचकर पाँच-छह सौ डॉलर तक देने को तैयार है।

लिंकन ने उसकी बात ध्यान से सुनी और कहा कि यह कर्ज धन से नहीं चुकाया जा सकता। यह इतना बड़ा है कि न उसके रिश्तेदार और न ही उसके पूर्वज इसे चुका सकते हैं। यह कर्ज केवल वही स्वयं चुका सकता है। विलियम के चेहरे पर असमंजस साफ दिखाई दे रहा था। उसने धीमी आवाज़ में पूछा कि वह यह कर्ज कैसे चुकाएगा। तब राष्ट्रपति ने कहा कि यदि वह जीवन भर ईमानदारी, कर्तव्यनिष्ठा और निष्ठा के साथ अपना फर्ज निभाएगा, तो वे मान लेंगे कि कर्ज चुका दिया गया है।

यह कोई साधारण शर्त नहीं थी। यह जीवन को नैतिक अनुशासन से बाँध देने का वचन था। विलियम ने बिना किसी संदेह के इसे स्वीकार कर लिया। राष्ट्रपति लिंकन ने उसकी प्राणदंड की सज़ा माफ कर दी। विलियम जेल से बाहर आया, लेकिन उसके भीतर अब एक गहरा बोध था कि उसका जीवन केवल संयोग से नहीं बचा, बल्कि एक जिम्मेदारी के साथ उसे वापस दिया गया है।

इसके बाद विलियम का जीवन पूरी तरह बदल गया। वह हर ड्यूटी को पहले से अधिक गंभीरता से निभाने लगा। उसके व्यवहार में अनुशासन, संयम और आत्मसंयम स्पष्ट झलकने लगा। वह जानता था कि हर छोटा-बड़ा कार्य उसके उस वचन से जुड़ा है, जो उसने राष्ट्रपति से किया था। उसके साथी सैनिकों ने महसूस किया कि विलियम अब अलग तरह का इंसान बन गया है—कम बोलने वाला, लेकिन काम में पूरी तरह डूबा हुआ।

कुछ समय तक शांति रही, लेकिन इतिहास की धारा कभी स्थिर नहीं रहती। जल्द ही युद्ध की आग फिर भड़क उठी। इस बार संघर्ष और भी उग्र था। विलियम बिना किसी भय के रणभूमि में उतर गया। गोलियों की आवाज़, विस्फोटों की गूंज और चारों ओर फैला मृत्यु का साया—इन सबके बीच वह असाधारण साहस के साथ लड़ता रहा। वह आगे बढ़कर मोर्चा संभालता, अपने साथियों को प्रेरित करता और घायल सैनिकों को सुरक्षित स्थान तक पहुँचाने में मदद करता।

एक निर्णायक संघर्ष के दौरान वह गंभीर रूप से घायल हो गया। उसे आभास हो गया कि यह उसके जीवन का अंतिम क्षण हो सकता है। उस समय उसके मन में न डर था, न पश्चाताप। उसे एक गहरी शांति का अनुभव हो रहा था। उसे लगा कि उसने अपने जीवन का उद्देश्य पूरा कर लिया है। मरने से कुछ समय पहले उसने राष्ट्रपति लिंकन के नाम एक संदेश भिजवाया, जिसमें लिखा था कि उसने अपना कर्ज चुका दिया है।

विलियम स्कॉट वीरगति को प्राप्त हुआ। उसका जीवन यह सिखाता है कि सच्चा कर्ज वह नहीं होता, जो धन से चुकाया जाए, बल्कि वह होता है, जो चरित्र, कर्तव्य और बलिदान से चुकाया जाता है। उसकी कहानी हमें याद दिलाती है कि कभी-कभी एक साधारण इंसान भी अपने आचरण से असाधारण उदाहरण बन जाता है, और उसका बलिदान समय से कहीं आगे तक अर्थ रखता है।

समतामूलक समाज लोकतंत्र की अनिवार्य शर्त

यूजीसी विवाद थमने का नाम नहीं ले रहा है। इस बारे में ऑनलाइन न जाने कितना कुछ पढ़ा, कितने वीडियो और रील्स देख चुकी। सब लोग अपनी-अपनी तरह से बातें कह रहे हैं।

बचपन से घर में सुनती आई हूं कि जातिवाद बहुत खराब चीज है। इससे हर हालत में मुक्ति पाई जानी चाहिए। ऐसे बहुत से बच्चों को अपने ही घर में पढ़ते-लिखते देखा, अच्छी नौकरियों पर जाते देखा है, जिन्हें तथाकथित निचली जाति कहा जाता है। इन्हें यहां तक पहुंचाने में बड़े भाई की बहुत भूमिका थी, क्योंकि वह दिल्ली विश्वविद्यालय में पढ़ाते थे। उस समय जाति तोड़क आंदोलन भी चलते थे, लेकिन आज इनका कहीं नाम भी सुनाई नहीं देता। यद्यपि पढ़े-लिखे तबके में इस बात पर आम सहमति है कि जाति को खत्म होना चाहिए। सभी को समान अवसर और सम्मान मिलना चाहिए, लेकिन जातिगत विमर्श नहीं चाहते कि जाति खत्म हो। क्योंकि उन्हें लगता है कि इसी के आधार पर वे सरकार की नीतियों में अपनी जगह बना सकते हैं। अधिक से अधिक हिस्सेदारी पा सकते हैं।

नब्बे के दशक में जब मंडल आयोग की सिफारिशें लागू की गई थीं, तब भी ऐसा आंदोलन हुआ था, लेकिन वह बहुत दिनों तक नहीं चला। सामान्य वर्ग ने इसे स्वीकार कर लिया।

तब देश ने भूमंडलीकरण की तरफ अपने कदम बढ़ाए। तमाम बड़ी कम्पनियां आईं। जिन लोगों के लिए सरकारी नौकरियां नहीं थीं, वे उधर चले गए और अवसरों की जो कमी कही जा रही थी, वह उतनी नहीं रही। बड़ी संख्या में लोग विदेश चले गए। बताया जाता है कि भारतीय सबसे अधिक पैसा अपने देश में भेजते हैं। देश की आर्थिकी को बढ़ाने में विदेशों में रहने वाले इन भारतीयों का बड़ा योगदान है, जिसका सेहरा अधिकांश राजनेता अपने सिर बांधते हैं। एक तरफ तो अब आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के कारण लाखों की नौकरियां जा चुकीं या जाने वाली हैं। अब नौकरी जाने का आधार यह भी नहीं रहा कि आप कितने मेहनती हैं। किसी कम्पनी की ग्रोथ में आपका कितना योगदान रहा। कम्पनियों को बढ़ाने में आपने चौबीस सात के हिसाब से काम किया। बल्कि रोबोट ही लाटरी के आधार पर फैसला कर रहे हैं कि किसे ऱखना है, किसे निकालना है। एआई के जन्मदाता ज्योफ्री हिंटन बार-बार कह रहे हैं कि इससे नब्बे प्रतिशत नौकरियां चली जाएंगी। दुनिया की किसी सरकार के पास बेरोजगारों की इतनी बड़ी फौज से निपटने की कोई योजना नहीं है। टेस्ला के मालिक एलन मस्क ने ही कुछ दिन पहले कहा था कि बीस साल बाद लोगों के पास करने के लिए कुछ नहीं बचेगा। लोग सिर्फ शौकिया ही काम करेंगे। ऐसे में यदि विकास के लिए आप पुराने औजारों को ही धार दे रहे हैं तो वे नहीं चलने वाले। अपने देश में नौकरियों में लगातार आरक्षणवाद का बढ़ना लोगों को शंकित करता है। लोग खुद कितनी भी तकलीफ झेल लें, लेकिन यदि उनके बच्चों पर कोई बात आती है तो वे इसे नहीं सह सकते। यूजीसी गाइडलाइंस ने यही किया। लोगों को लगा कि अब तक तो नौकरियों पर ही खतरे थे, अब उनके बच्चे पढ़ भी नहीं सकते। वैसे भी दशकों से सामान्य वर्ग कहे जाने वाले लोगों के लिए सरकारों के पास कोई योजना नहीं है। दस प्रतिशत ईडब्ल्यूएस आरक्षण से भी कितने लोगों को नौकरियां मिली हैं। भारत सरकार की ही रिपोर्ट कहती है कि सामान्य वर्ग कहे जाने वाले लोगों में बेरोजगारी की दर सबसे ज्यादा है। लेकिन अपनी ही रिपोर्ट से शायद सरकारों ने आंखें मूंद रखी हैं।

जिस लोकतंत्र की दुहाई हम हर रोज देते हैं, वह दरअसल संख्या का खेल है, जिसका जितना वोट, उसे पाने के लिए उतनी ही सरकारी योजनाएं। जितनी जिसकी संख्या भारी, उतनी उसकी हिस्सेदारी। किसी विदेशी विद्वान ने कहा था कि लोकतंत्र एक सतत युद्ध है, जो दिखाई भी देता है।

आम शहरी मध्यवर्ग ने सरकार के नारे कि हम दो हमारे दो को अपना लिया। आज तो यह और बढ़कर, हम दो हमारा एक हो गया है। ऐसे में सामान्य वर्ग की आबादी कम भी होती गई है। बढ़ता शहरीकरण भी इसका एक कारण है। कई वीडियो और रील्स ऐसी देखीं, जिसमें लोग यही कह रहे हैं कि सारी जिम्मेदारी हमारी ही क्यों है। हम ही टैक्स दें। हम ही कम से कम बच्चे पैदा करें और हमारी कम आबादी के कारण केंद्र और राज्य की सरकारें हम से मुंह मोड़ लें। ऐसे में एक वर्ग छला हुआ महसूस कर रहा है।

देश में चालू विमर्शों, जैसे स्त्री विमर्श, दलित विमर्श, आदिवासी विमर्श, ओबीसी विमर्श आदि के कारण बहुत से ऐसे कानून बने हैं, जहां एक बार शिकायत करते ही आरोपी को अपराधी बना दिया जाता है। उसे जेल भेज दिया जाता है। सुनवाई भी कहीं नहीं होती। कुछ साल पहले उच्चतम न्यायालय ने यही तो कहा था कि दलित एट्रोसिटीज एक्ट के अंतर्गत शिकायत हो, तो किसी को तुरंत न पकड़ा जाए, पहले जांच की जाए। इस बात पर बहुत से संगठनों ने हल्ला मचाया और न्यायालय के इस निर्णय को सरकार ने पलट दिया। आखिर बिना जांच के कि किसी ने अपराध किया है या नहीं, किसी को जेल भेज देना किस कानून में लिखा है। किस लोकतांत्रिक मूल्य को पुख्ता करता है। दहेज निरोधी कानून के अंतर्गत भी आरोप लगाते ही पकड़ लिया जाता है। दुनिया में कहीं भी इस तरह के एकपक्षीय कानून नहीं हैं।

कानून का स्वरूप प्राकृतिक न्याय वाला होना चाहिए। उसे जाति, लिंग, धर्म के आधार पर न्याय नहीं करना चाहिए। लेकिन सरकारें चूंकि वोट के बहुसंख्यक वाद से चलती हैं, इसलिए हर नीति और कानून वह बनाती हैं, जिससे उन्हें अधिक से अधिक वोट मिलें। यूजीसी मामले में भूमिका निभाने वाली मशहूर वकील इंदिरा जयसिंह ने एक सवाल के जवाब में कहा कि सामान्य वर्ग को किसी स्कालरशिप की क्या जरूरत। वे सब तो बहुत पैसे वाले हैं। मैडम एक बार गांवों में जाकर ही देख आतीं।

अभियान

अंधकारमय चेतना से दिव्य जागरण तक ले जाने वाला महाशिवरात्रि पर्व

महाशिवरात्रि भारतीय आध्यात्मिक परंपरा का ऐसा पर्व है, जो केवल एक धार्मिक अनुष्ठान तक सीमित नहीं है, बल्कि मानव चेतना के गहन परिवर्तन का प्रतीक है। यह वह पावन अवसर है, जब अज्ञान, अपवित्रता और आत्मविस्मृति की गहरी रात्रि से निकलकर मानव आत्मा ज्ञान, पवित्रता और दिव्यता के प्रभात की ओर अग्रसर होती है। महाशिवरात्रि को समस्त मानव आत्माओं के परमपिता, परमात्मा शिव के दिव्य अवतरण का स्मरणोत्सव माना जाता है। अन्य देवी-देवताओं की जयंती या जन्मोत्सव की तुलना में यह पर्व इसलिए विशिष्ट है, क्योंकि परमात्मा शिव का जन्म नहीं होता, बल्कि वे अवतरित होते हैं। वे अजन्मा, स्वयंभू और शाश्वत हैं, जो सृष्टि के अंतिम चरण में मानव जाति को पतन से उबारने के लिए स्वयं पहल करते हैं।

सृष्टि चक्र के अनुसार जब मानव समाज सतयुग और त्रेता की पवित्रता, शांति और दैवी मर्यादाओं से दूर होकर द्वापर और कलियुग की विषय-वासनाओं में उलझ जाता है, तब धीरे-धीरे आत्मिक शक्तियाँ क्षीण होने लगती हैं। काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार मानव जीवन पर हावी हो जाते हैं। यही अवस्था अज्ञान की रात्रि कही जाती है। बाहरी रूप से संसार भले ही प्रगति करता दिखाई दे, विज्ञान और तकनीक नई ऊँचाइयों को छू लें, लेकिन आत्मा भीतर से खाली, अशांत और दुखी हो जाती है। इस गहन अंधकार में मानव स्वयं अपने वास्तविक स्वरूप को भूल जाता है। ऐसे समय में परमात्मा शिव का अवतरण होता है, जो सोई हुई आत्माओं को उनके वास्तविक परिचय से जगाने का कार्य करते हैं।

महाशिवरात्रि फाल्गुन मास के कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी की अंधेरी रात्रि को मनाई जाती है। यह तिथि केवल पंचांग की गणना नहीं है, बल्कि उसका गहरा आध्यात्मिक अर्थ है। यह रात्रि उस चरम अवस्था का प्रतीक है, जब अज्ञान, तमोगुण और पतन अपनी पराकाष्ठा पर होते हैं। इसी रात्रि में परमात्मा शिव ज्ञान की ज्योति प्रज्वलित करते हैं। ग्लोबल डिवाइन लाइट हाउस की राजयोगिनी शिक्षिका बी.के. पूनम बहन के अनुसार महाशिवरात्रि में 'रात्रि' शब्द केवल समय नहीं, बल्कि चेतना की स्थिति को दर्शाता है। जब संसार विकारों के अंधकार में डूब जाता है, तब शिव ज्ञान का प्रकाश फैलाकर मानव आत्माओं को नई दिशा देते हैं। यही कारण है कि उनके अवतरण दिवस को महाशिवरात्रि कहा गया है।

भारतीय दर्शन में सृष्टि चक्र को दिन और रात्रि के रूप में समझाया गया है। सतयुग और त्रेता युग को ब्रह्मा का दिन कहा गया है, जब दैवी गुणों की प्रधानता रहती है। इसके विपरीत द्वापर और कलियुग को ब्रह्मा की रात्रि कहा जाता है, जब अज्ञान और विकार बढ़ जाते हैं। इस दृष्टि से देखा जाए तो कलियुग, चाहे वह कालगणना में दिन जैसा लगे, वास्तव में आत्मिक दृष्टि से अज्ञान की रात्रि के समान है। महाशिवरात्रि इसी रात्रि के अंत और नए प्रभात के आगमन की सूचना देती है।

देशभर में महाशिवरात्रि श्रद्धा, भक्ति और उल्लास के साथ मनाई जाती है। शिवालयों में भक्तों की लंबी कतारें लगती हैं। शिवलिंग पर बेलपत्र, धतूरा, भांग, दूध और जल अर्पित किया जाता है। उपवास रखा जाता है और रात्रि जागरण किया जाता है। सामान्य दृष्टि से ये सभी क्रियाएं धार्मिक परंपराएं प्रतीत होती हैं, लेकिन इनके पीछे गहरा आध्यात्मिक संदेश छिपा है। शिवलिंग ज्योति स्वरूप परमात्मा का प्रतीक है, जो निराकार, निर्विकार और निरहंकारी हैं। बेलपत्र, धतूरा और भांग जैसे पदार्थ हमारे भीतर के अवगुणों का प्रतीक हैं, जिन्हें हम प्रतीक रूप में परमात्मा को अर्पित करते हैं, अर्थात् उन्हें त्यागने का संकल्प लेते हैं। उपवास का अर्थ केवल भोजन से दूरी नहीं, बल्कि विकारों और नकारात्मक प्रवृत्तियों से विरक्ति है। रात्रि जागरण का अर्थ है आत्मा का जागरण, ताकि वह अज्ञान की नींद से बाहर आ सके।

परमात्मा शिव को सत्-चित्-आनंद स्वरूप कहा गया है। वे न जन्म लेते हैं, न मृत्यु के बंधन में बंधते हैं। वे सृष्टि के साक्षी हैं और समय-समय पर मानव कल्याण के लिए अवतरित होते हैं। कलियुग के अंतिम चरण में वे साधारण मानव तन में प्रवेश कर मानव आत्माओं को ज्ञान और राजयोग की शिक्षा देते हैं। यह ज्ञान केवल शास्त्रीय जानकारी नहीं, बल्कि आत्मा और परमात्मा के वास्तविक संबंध का बोध कराता है। राजयोग वह साधना है, जिसके माध्यम से आत्मा परमात्मा से बुद्धियोग जोड़कर अपनी खोई हुई शक्तियों को पुनः प्राप्त करती है। यही ज्ञान मानव दृष्टिकोण, सोच और जीवन शैली को श्रेष्ठ बनाता है।

महाशिवरात्रि का पर्व हमें यह स्मरण कराता है कि सृष्टि परिवर्तन कोई बाहरी प्रक्रिया नहीं, बल्कि चेतना का परिवर्तन है। जब आत्माएं शुद्ध, शांत और प्रेममय बनती हैं, तभी नई पावन सृष्टि का निर्माण होता है। यह पर्व उस स्वर्णिम प्रभात का संदेश देता है, जब दुख, अशांति और संघर्ष से भरी दुनिया सुख, शांति और आनंद की ओर अग्रसर होगी। जैसे वसंत ऋतु में प्रकृति नवजीवन से भर उठती है, वैसे ही महाशिवरात्रि आत्मिक वसंत का संकेत है।

इस पावन अवसर पर परमात्मा शिव समस्त मानव आत्माओं को ईश्वरीय निमंत्रण देते हैं। वे आह्वान करते हैं कि आत्माएं उन्हें पहचानें, अपने वास्तविक स्वरूप को जानें और विकारों के बोझ से मुक्त हों। यह समय साधारण नहीं है। यह वही संगमयुग है, जब पुरानी पतित दुनिया का अंत और नई पावन दुनिया की शुरुआत होती है। महाशिवरात्रि का संदेश स्पष्ट है—"अभी नहीं तो कभी नहीं।" यही वह समय है, जब परमात्मा से बुद्धियोग जोड़कर जीवन को वास्तव में सार्थक और धन्य बनाया जा सकता है।

आज का मानव बाहरी सुख-सुविधाओं के बीच भी भीतर से असंतुष्ट और अशांत है। इसका कारण यह है कि उसने अपने आत्मिक मूल्यों से दूरी बना ली है। महाशिवरात्रि हमें पुनः उसी मूल स्रोत की ओर लौटने का आह्वान करती है। यह पर्व केवल मंदिर जाने या व्रत रखने तक सीमित नहीं है, बल्कि आत्मा के भीतर एक नई चेतना जगाने का अवसर है। जब आत्मा परमात्मा शिव के ज्ञान से जुड़ती है, तब उसका अज्ञान मिटता है और जीवन में स्थायी शांति, प्रेम और आनंद का अनुभव होता है।

अंततः महाशिवरात्रि मानव आत्मा और परमात्मा के मिलन का दिव्य पर्व है। यह पर्व हमें अंधकार से प्रकाश की ओर, अशांति से शांति की ओर और पतन से उत्थान की ओर ले जाता है। यह केवल एक तिथि नहीं, बल्कि एक चेतना है, जो मानव को उसकी खोई हुई दिव्यता की याद दिलाती है। यही महाशिवरात्रि का शाश्वत और सार्वभौमिक संदेश है।

RNI No. GJHIN/25/A2786 Printed, Published & Owned by RAGINI JIGNESHKUMAR VAGHELA and Printed By (1) JIGNESH RASHIKBHAI GAJJAR at Vansh Corporation, A/8, Shayona Golden Estate, Shahibag, Ahmedabad - 380 004
(2) DESAI RAHUL MAHESHBHAI at Bhavani Offset, "Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002. (3) HADIK MAHESHBHAI DESAI at Bhoomi Offset, "Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002
and Published from B/13, Sneh Plaza Shopping Center, I.O.C. Road, Chandkheda, Ahmedabad - 382 424. Editor : JIGNESHKUMAR PATHABHAI VAGHELA
Regd.Office : B/13, Sneh Plaza Shopping Center, I.O.C. Road, Chandkheda, Ahmedabad - 382 424 Gujarat,India. Phone : (o) 7698333307 (M) 8485951747,7096333307
Email:navsarjansanskruti2016@gmail.com*navsarjansanskruti2016@yahoo.com*Website : www.navsarjansanskruti.com

“हम सब साथ हैं, खिलाफ नहीं”: गुजरात बार काउंसिल चुनाव 2026 से पहले सूरत के वकीलों की एकता का शक्तिशाली प्रदर्शन

(जीएनएस)। सूरत। गुजरात बार काउंसिल (बीसीजी) चुनाव–2026 को लेकर सूरत डिस्ट्रिक्ट के अधिवक्ताओं में संगठन, संवाद और सामूहिक नेतृत्व की भावना को मजबूत करने के उद्देश्य से मंगलवार, 10 फरवरी 2026 को अडाजन स्थित बद्रीनारायण मंदिर परिसर में एक भव्य स्वागत एवं संबोधन समारोह का आयोजन किया गया। दोपहर 2:00 बजे आयोजित इस कार्यक्रम का नेतृत्व टीम प्रीति–जिग्नेश जोशी ने किया। समारोह का केंद्रीय संदेश स्पष्ट था—“हम सब साथ हैं, खिलाफ नहीं।” चुनावी माहौल के बीच यह आयोजन प्रतिस्पर्धा से अधिक एकता और प्रतिनिधित्व की शक्ति को रेखांकित करता नजर आया।

कार्यक्रम की शुरुआत विधिवत धार्मिक अनुष्ठान से हुई। भगवान गणेश एवं देवी लक्ष्मी की वंदना, पूजा-अर्चना और श्लोक पाठ के साथ समारोह का शुभारंभ कराया गया। अरुणभाई महाराज ने वैदिक मंत्रोच्चार के साथ वातावरण को आध्यात्मिक ऊर्जा से भर दिया। इसके पश्चात महाप्रसाद की व्यवस्था भी की गई, जिससे आयोजन में सहभागिता और सौहार्द का वातावरण बना रहा।

समारोह में सूरत के विधि समुदाय के कई प्रतिष्ठित नाम उपस्थित रहे। मुख्य अतिथि के रूप में सूरत डिस्ट्रिक्ट गवर्नमेंट एडवोकेट नयनभाई सुखडवाला ने भाग लिया। उनके साथ सीनियर एडवोकेट कल्पेशभाई देसाई, राजेशभाई ठाकरिया, मनीषभाई देसाई, केतनभाई रेशमवाला, अश्विनभाई पेंटर, विनयभाई शुक्ला, नोटरी एसोसिएशन के अध्यक्ष शांतिलाल पटेल, लेबर कोर्ट के सीनियर एडवोकेट जयेशभाई भलवालिया, विष्णुभाई राणा, सूरत डिस्ट्रिक्ट बार एसोसिएशन के एल. आर. फैनी पटेल और ट्रेज़रर दिव्या कोसंबिया सहित अनेक वरिष्ठ अधिवक्ता मौजूद रहे। उनकी उपस्थिति ने कार्यक्रम को गरिमा और व्यापक समर्थन का स्वरूप दिया।

बीसीजी चुनाव–2026 के उम्मीदवारों में प्रीति जे. जोशी, भावेश रबारी, बलवंत सुरती और झड़ी शेख मंच पर उपस्थित रहे। अन्य उम्मीदवार हितेशभाई पटेल और विराज सुर्वे व्यस्तताओं के कारण उपस्थित नहीं हो सके, लेकिन उन्होंने अपनी शुभकामनाएं भेजीं। टीम प्रीति–जिग्नेश जोशी के आग्रह पर अतिथियों द्वारा दीप प्रज्वलन किया गया, जो एक नई शुरुआत और सामूहिक संकल्प का प्रतीक बना। इसके बाद वरिष्ठ वकीलों का गुलदस्ता देकर सम्मान किया गया तथा उम्मीदवारों को सर्टिफिकेट प्रदान किए गए।

अपने संबोधन में एडवोकेट प्रीतिबेन जोशी ने कहा कि सूरत के अधिवक्ताओं को व्यक्तिगत मतभेदों से ऊपर उठकर संगठित रूप से गुजरात बार काउंसिल में सशक्त प्रतिनिधित्व स्थापित करना चाहिए। उन्होंने विश्वास जताया कि यदि सभी उम्मीदवार सकारात्मक सोच के साथ एक मंच पर आएं, तो सूरत विधि जगत में अग्रणी भूमिका निभा सकता है। सीनियर एडवोकेट कल्पेशभाई देसाई ने संगठन की शक्ति और सामूहिक निर्णय की महत्ता पर जोर देते हुए कहा कि एकजुटता ही सफलता की कुंजी है। एडवोकेट राजेशभाई ठाकरिया ने “हम सब साथ हैं, खिलाफ नहीं” के संदेश को दोहराते हुए चुनाव को स्वस्थ लोकतांत्रिक प्रक्रिया के रूप में देखने का आग्रह किया। एडवोकेट विनय शुक्ला ने अधिकाधिक मतदान की अपील करते हुए इस मंच को उम्मीदवारों के बीच समन्वय और संवाद की दिशा में महत्वपूर्ण पहल बताया।

मुख्य अतिथि नयनभाई सुखडवाला ने आयोजन की सराहना करते हुए कहा कि चुनाव प्रतिस्पर्धा का नहीं, बल्कि विचारों और सेवा भावना का उत्सव होना चाहिए। उन्होंने टीम प्रीति जोशी और सभी उम्मीदवारों को बधाई देते हुए एकता की भावना बनाए रखने का संदेश दिया। कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे एडवोकेट मनीषभाई देसाई ने कहा कि पूरे आयोजन में एकजुट स्वर स्पष्ट रूप से दिखाई दिया और वरिष्ठ अधिवक्ताओं के हितों की रक्षा के लिए सभी एक मंच पर खड़े हैं।

उम्मीदवारों प्रीति जिग्नेश जोशी, बलवंतभाई सुरती, भावेशभाई रबारी और झड़ी शेख ने भी अपने विचार रखे और अधिवक्ताओं के व्यावसायिक विकास, प्रशिक्षण, पारदर्शिता और बार काउंसिल में सक्रिय प्रतिनिधित्व जैसे मुद्दों पर विस्तार से चर्चा की। उन्होंने सूरत के वरिष्ठ और युवा वकीलों के हितों की रक्षा तथा पेशेवर सशक्तिकरण के लिए संगठित प्रयासों की आवश्यकता पर बल दिया।

कार्यक्रम में बड़ी संख्या में वरिष्ठ, जूनियर और महिला अधिवक्ताओं की उपस्थिति ने यह संदेश दिया कि सूरत का विधि समुदाय चुनाव को टकराव के बजाय सहयोग और समन्वय के अवसर के रूप में देख रहा है। अंत में एडवोकेट बीना भगत ने सभी अतिथियों और उपस्थित वकीलों का आभार व्यक्त किया। महाप्रसाद के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ, लेकिन एकता और संगठन का जो संदेश इस मंच से निकला, वह आने वाले बीसीजी चुनाव–2026 में सूरत की सक्रिय और संगठित भूमिका की ओर संकेत करता है।

वडोदरा में मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य सेवाओं की सुदृढ़ पहल, हजारों परिवारों को योजनाओं का मिला लाभ

(जीएनएस)। वडोदरा। नेशनल हेल्थ मिशन (एनएचएम) के अंतर्गत वडोदरा जिले में मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य योजनाओं का प्रभावी और व्यापक क्रियान्वयन किया जा रहा है। चीफ डिस्ट्रिक्ट हेल्थ ऑफिसर, डिस्ट्रिक्ट पंचायत वडोदरा के नेतृत्व में जिला स्वास्थ्य तंत्र अंतिम व्यक्ति तक गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवाएं पहुंचाने के उद्देश्य से सतत प्रयासरत है। वित्तीय वर्ष 2025-26 के पहले छह महीनों में जिले ने विभिन्न सरकारी योजनाओं के माध्यम से हजारों लाभार्थियों को सहायता प्रदान कर उल्लेखनीय उपलब्धि दर्ज की है, जिससे मातृ एवं शिशु मृत्यु दर में कमी लाने और सुरक्षित प्रसव को बढ़ावा देने की दिशा में ठोस प्रगति हुई है।

अप्रैल 2025 से सितंबर 2025 के बीच जननी सुरक्षा योजना के तहत संस्थागत प्रसव को प्रोत्साहित करने के लिए कुल 1,385 महिलाओं को 9.59 लाख रुपये की वित्तीय सहायता प्रदान की गई। इस योजना का उद्देश्य गर्भवती महिलाओं को अस्पताल में सुरक्षित प्रसव के लिए प्रेरित करना है, जिससे प्रसव के दौरान होने वाली जटिलताओं और जोखिमों को कम किया जा सके। इसी अवधि में जननी शिशु सुरक्षा कार्यक्रम के अंतर्गत 131 गर्भवती महिलाओं को निशुल्क स्वास्थ्य सेवाएं, दवाइयां, जांच और उपचार की सुविधा उपलब्ध कराई गई, जिस पर लगभग 26,137 रुपये व्यय किए गए।

केंद्र और राज्य सरकार की संयुक्त पहल प्रधानमंत्री मातृवंदना योजना (पीएमएमवीवाई), जिसे अब ‘नमोश्री योजना’ के रूप में लागू किया गया है, के तहत भी जिले में व्यापक लाभ पहुंचाया गया है। अप्रैल से सितंबर 2025 के दौरान 3,820 लाभार्थियों को 1.39 करोड़ रुपये की वित्तीय सहायता सीधे उनके बैंक खातों में जमा की गई। अब तक नमोश्री योजना के अंतर्गत 15,768 महिलाओं का पंजीकरण किया जा चुका है और 3 करोड़ रुपये से अधिक की राशि प्रत्यक्ष लाभ अंतरण (डीबीटी) के माध्यम से वितरित की गई है। यह योजना गर्भावस्था के दौरान पोषण और देखभाल सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है।

इसके अतिरिक्त, प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना (पीएम-जय) के तहत आयुष्मान कार्ड निर्माण में भी वडोदरा जिला अग्रणी रहा है। आर्थिक रूप से कमजोर और मध्यम वर्गीय परिवारों को गंभीर बीमारियों की स्थिति में आर्थिक सुरक्षा प्रदान करने के उद्देश्य से अब तक 12.18 लाख आयुष्मान कार्ड बनाए जा चुके हैं। इससे जरूरतमंद परिवारों को सूचीबद्ध अस्पतालों में कैशलेस उपचार की सुविधा मिल रही है।

चीफ डिस्ट्रिक्ट हेल्थ ऑफिसर ने बताया कि जिला स्वास्थ्य तंत्र भविष्य में भी योजनाओं के प्रभावी क्रियान्वयन और पात्र लाभार्थियों तक उनकी पहुंच सुनिश्चित करने के लिए प्रतिबद्ध रहेगा। प्रशासन का लक्ष्य है कि मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य सेवाओं को और अधिक सुलभ, पारदर्शी और प्रभावी बनाया जाए, ताकि प्रत्येक मां और बच्चे को सुरक्षित एवं स्वस्थ जीवन की शुरुआत मिल सके।

सूरत : वनवासी समाज की शिक्षा के लिए दौड़े 6 हजार से अधिक रनर्स, ‘रन टू एजुकेट’ का दिया सशक्त संदेश

(जीएनएस)। सूरत। वनवासी समाज के शैक्षिक सशक्तिकरण और जन-जागरूकता को नई दिशा देने के उद्देश्य से फ्रेंड्स ऑफ ट्राइबल्स सोसायटी (वनबंधु परिषद) द्वारा रविवार को “हाफ मैराथन एकल रन 3.0” का भव्य एवं सुव्यवस्थित आयोजन किया गया। वीर नर्मद साउथ गुजरात यूनिवर्सिटी (वीएनएसजीयू) परिसर से सुबह ठीक 6 बजे प्रारंभ हुई इस मैराथन ने न केवल खेल भावना का परिचय दिया, बल्कि सामाजिक उत्तरदायित्व का भी सशक्त संदेश समाज तक पहुंचाया। आयोजन का मुख्य उद्देश्य वनवासी क्षेत्रों में शिक्षा के महत्व को रेखांकित करना और अधिक से अधिक लोगों को इस अभियान से जोड़ना था।

सूरत पुलिस कमिश्नर अनुपम सिंह गहलोत ने हरी झंडी दिखाकर मैराथन को रवाना किया। इस अवसर पर वीएनएसजीयू के कुलपति डॉ. किशोर सिंह चावड़ा तथा वनबंधु परिषद के राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष त्रिभुवन काबरा विशेष रूप से उपस्थित रहे। अतिथियों ने अपने संबोधन में कहा कि शिक्षा ही किसी भी समाज के समग्र विकास की आधारशिला है। वनवासी समाज के बच्चों तक गुणवत्तापूर्ण शिक्षा पहुंचाना केवल एक सामाजिक दायित्व नहीं, बल्कि राष्ट्र निर्माण की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है। उन्होंने इस आयोजन को जनभागीदारी का उत्कृष्ट उदाहरण बताया।

“रन टू एजुकेट” के प्रेरक ध्येय वाक्य के साथ आयोजित एकल रन 3.0 में 6 हजार से अधिक रनर्स और पेसर्स ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। इनमें लगभग 500 प्रतिभागी सूरत के बाहर से आए थे, जिससे स्पष्ट है कि यह आयोजन अब क्षेत्रीय सीमाओं से आगे बढ़कर व्यापक सामाजिक आंदोलन का रूप ले चुका है। युवाओं, महिलाओं, वरिष्ठ नागरिकों और बच्चों—सभी आयु वर्ग के लोगों ने बढ़-चढ़कर भागीदारी की। “छोटे कदम – बड़े इरादे” के मूल मंत्र के साथ प्रतिभागियों ने यह संदेश दिया कि सामूहिक प्रयासों से ही बड़े सामाजिक परिवर्तन संभव हैं।

दौड़ का मार्ग सुव्यवस्थित और सुरक्षित रखा गया था। जगह-जगह स्वयंसेवकों की टीम, मेडिकल स्टाफ और पुलिसकर्मी तैनात थे, जिससे आयोजन शांतिपूर्ण और सुरक्षित वातावरण में संपन्न हुआ। सभी प्रतिभागियों के लिए पानी, एनर्जी ड्रिंक, प्राथमिक चिकित्सा सुविधा, ड्रेस किट, फिनिशर मेडल और अल्पाहार की समुचित व्यवस्था की गई थी। आयोजन की पेशेवर व्यवस्था ने प्रतिभागियों को सकारात्मक अनुभव प्रदान किया।

इस मैराथन की विशेष आकर्षण यह रहा कि कई प्रतिभागियों ने पार्टी सूट, साड़ी और पारंपरिक वेशभूषा पहनकर दौड़ में भाग लिया। इससे भारत की सांस्कृतिक विविधता और एकता का सुंदर प्रदर्शन देखने को मिला। सामाजिक संदेश के साथ-साथ यह आयोजन रंगों, उत्साह और प्रेरणा का उत्सव बन गया। विभिन्न श्रेणियों—पुरुष, महिला और अलग-अलग आयु वर्ग—में विजेता प्रतिभागियों को सम्मानित किया गया।

कार्यक्रम को सफल बनाने में कई दानदाताओं और सहयोगियों का महत्वपूर्ण योगदान रहा। स्पॉन्सर्स के रूप में विशाल बुधिया, राजेश गुप्ता, अरविंद कोठारी और महेश जरीवाला ने विशेष सहयोग दिया। संस्था के संरक्षक प्रमोद चौधरी, वेस्ट जोन चेयरमैन श्याम गर्ग, एकल रन के चेयरमैन श्रीनारायण पेड़ीवाल, रेस डायरेक्टर ललित पेड़ीवाल तथा इवेंट कोऑर्डिनेटर युवा टीम के गौतम प्रजापति, गोपेश अग्रवाल, अनुराग जैन और जय स्वर्णकार सहित अनेक पदाधिकारी एवं स्वयंसेवकों ने आयोजन को सफल बनाने में सक्रिय भूमिका निभाई।

वनबंधु परिषद वर्षों से वनवासी क्षेत्रों में एकल विद्यालयों के माध्यम से शिक्षा का प्रकाश फैलाने का कार्य कर रही है। “एकल रन 3.0” उसी मिशन का विस्तार है, जिसका उद्देश्य समाज के प्रत्येक वर्ग को इस सेवा कार्य से जोड़ना है। इस आयोजन ने यह सिद्ध कर दिया कि जब समाज एक सकारात्मक उद्देश्य के लिए एकजुट होता है, तो बदलाव की गति तेज हो जाती है।

समापन अवसर पर आयोजकों ने सभी प्रतिभागियों, अतिथियों और सहयोगियों का आभार व्यक्त किया। यह मैराथन केवल एक खेल प्रतियोगिता नहीं, बल्कि शिक्षा के माध्यम से वनवासी समाज के उज्ज्वल भविष्य की दिशा में उठाया गया एक मजबूत और प्रेरणादायी कदम साबित हुई।

छारी-ढंढ वेटलैंड में आने वाला यह प्रवासी पक्षी दुनियाभर के पक्षीप्रेमियों को करता है आकर्षित

- दुनियाभर के अनेक पर्यटक केवल ‘ग्रे हाइपोकोलियस’ पक्षी को देखने के लिए ही आते हैं छारी-ढंढ
- मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल के मार्गदर्शन में राज्य में आर्द्रभूमि क्षेत्रों के संरक्षण की दिशा में महत्वपूर्ण कदम उठाए गए
- कच्छ के छारी-ढंढ वेटलैंड में पक्षियों की विविधता; विशेषकर ग्रे हाइपोकोलियस तथा व्हाइट-नेप्ड टिट को देखने के लिए 52 से अधिक देशों के (विदेशी) पर्यटक नियमित रूप से आते हैं

जीएनएस)। गांधीनगर : कच्छ जिले के छारी-ढंढ कंजर्वेशन रिजर्व को हाल ही में रामसर साइट का दर्जा मिला है। इस आर्द्रभूमि के आसपास 283 से अधिक प्रजाति के पक्षी दर्ज हुए हैं, परंतु यहाँ देखे जाने वाले दुर्लभ एवं प्रवासी पक्षी दुनियाभर के पर्यटकों को आकर्षित करते हैं। इन पक्षियों में ग्रे हाइपोकोलियस मुख्य आकर्षण का केन्द्र है। गुजराती में इसे ‘मस्कती लटोरो’ कहते हैं।

ग्रे हाइपोकोलियस (Hypocolius ampelinus) सबसे विशिष्ट तथा आकर्षक पक्षी है। पतली काया वाला यह पक्षी इराक, ईरान, अफगानिस्तान तथा पाकिस्तान के शुष्क क्षेत्रों में प्रजनन करता है और 1990 से कच्छ के छारी-ढंढ के आर्द्रभूमि क्षेत्र में शीत ऋतु बिताने आता है।

विशेषज्ञों के अनुसार ग्रे हाइपोकोलियस सामान्यतः शुष्क झाड़ीदार क्षेत्रों, मरु (रण) प्रदेशों एवं निकटस्थ कृषि क्षेत्रों में देखने को मिलते हैं। वे ज्यादातर छोटे समूहों में देखे जाते हैं तथा फलदार पेड़ तथा झाड़ियों के फल-बेर उनका आहार होते हैं। विशेषकर; इस पक्षी को पिलुडी (Salvadora oleoides/persica) के फल ‘पीलु’ अति प्रिय हैं। शीत ऋतु के महीनों में दुनियाभर के पक्षीप्रेमी तथा शोधकर्ता इस दुर्लभ प्रवासी पक्षी को देखने के लिए छारी-ढंढ जरूर आते हैं।

पक्षी निरीक्षक कहते हैं कि ग्रे हाइपोकोलियस अक्टूबर-नवंबर के दौरान फुलाय गाँव के झाड़ी वाले जंगलों में आते हैं और मार्च या अप्रैल तक यहाँ रहते हैं। यह पक्षी मुख्यतः Salvadora persica के पके हुए बेर (स्थानीय रूप से ‘पिलुडी’ या ‘खारी जार’) पर निर्भर रहता है। इसके अतिरिक्त; यह ‘टांकरा’ नाम से जाने जाने वाले पौधे के फूल के बेर भी खाता है।

एक रिसर्च के अनुसार 22 और 23 मार्च, 1960 को कच्छ के बड़े रण में कुआर बेट (टापू) से ग्रे हाइपोकोलियस के दो सैम्पल एकत्र किए गए थे। इसके बाद 23 जनवरी, 1990 को पक्षीविद् श्री एस. एन. वरु ने बन्नी के घास वाले मैदानों में स्थित फुलाय गाँव में एक मादा ग्रे हाइपोकोलियस को देखा था। उनके इस निरीक्षण को एक महत्वपूर्ण पुनर्शोध माना जाता है। छारी-ढंढ वेटलैंड में ग्रे हाइपोकोलियस को देखने के लिए यह सबसे विश्वसनीय एवं श्रेष्ठ स्थल माना जाता है; जिसके कारण यह स्थल वैश्विक पर्यटकों, पक्षीप्रेमियों तथा वन्यजीव फोटोग्राफरों के लिए मुख्य आकर्षण बन गया है।

इसके अतिरिक्त; व्हाइट-नेप्ड टिट (Machlolophus nuchalis) पक्षी को देखने के लिए भी पर्यटक आते हैं। यह पक्षी दुनियाभर में केवल भारत में ही देखने को मिलता है और भारत में सबसे अधिक कच्छ में।

पश्चिम रेलवे चलाएगी असारवा और आगरा केंट के बीच स्पेशल ट्रेन

जीएनएस)। पश्चिम रेलवे द्वारा आगामी फेस्टिवल सीजन के दौरान यात्रियों की मांग एवं सुविधा को ध्यान में रखते हुए असारवा और आगरा केंट के बीच स्पेशल ट्रेन विशेष किराये पर चलाने का निर्णय लिया गया है। जिसका विवरण निम्नानुसार हैः ट्रेन संख्या 01920/01919 असारवा-आगरा केंट-असारवा स्पेशल (42 ट्रिप)

ट्रेन संख्या 01920 असारवा-आगरा केंट स्पेशल 02 मार्च से 30 मार्च 2026 तक (मंगलवार और बुधवार को छोडकर) असारवा से प्रतिदिन 14.50 बजे प्रस्थान करेगी तथा अगले दिन 07.45 बजे आगरा केंट पहुंचेगी। इस तरह ट्रेन संख्या 01919 आगरा केंट-असारवा स्पेशल 01 मार्च से 29 मार्च 2026 तक (सोमवार और मंगलवार को छोडकर) आगरा केंट से प्रतिदिन 18.10 बजे प्रस्थान करेगी तथा अगले दिन 11.10 बजे असारवा पहुंचेगी। मार्ग में दोनों दिशाओं में यह ट्रेन हिम्मतनगर, शामलाजी रोड, डूंगरपुर, सेमारी, जावर, उदयपुर सिटी, राणा प्रताप नगर, मावली, चंदेरिया, मांडल गढ़, बूंदी, केशोराय पाटन, सवाई माधोपुर, गंगापुर सिटी, रूपबास और फतेहपुर सीकरी स्टेशनों पर रुकेगी।

इस ट्रेन में एसी 3-टियर, स्लीपर एवं सामान्य श्रेणी के कोच रहेंगे।

ट्रेन सं. 01920 की बुकिंग 11 फरवरी 2026 से सभी पीआरएस काउंटरों और आईआरसीटीसी वेबसाइट पर शुरू होगी। ट्रेनों के ठहराव, समय और संरचना के संबंध में विस्तृत जानकारी के लिए यात्री कृपया www.enquiry.indianrail.gov.in पर जाकर अवलोकन कर सकते हैं।

सोना वायदा में 319 रुपये, चांदी वायदा में 2381 रुपये और क्रूड ऑयल वायदा में 43 रुपये की नरमी

- कमोडिटी वायदाओं में 15658.22 करोड़ रुपये और कमोडिटी ऑप्शंस में 62794.42 करोड़ रुपये का दर्ज हुआ टर्नओवर : सोना-चांदी के वायदाओं में 12597.20 करोड़ रुपये का हुआ कारोबार : बुलियन इंडेक्स बुलडेक्स फ्यूचर्स 39287 पॉइंट के स्तर पर

जीएनएस)। मुंबईः देश के अग्रणी कमोडिटी डेरिवेटिव्स एक्सचेंज एमसीएक्स पर कमोडिटी वायदा, ऑप्शंस और इंडेक्स फ्यूचर्स में 78453.11 करोड़ रुपये का टर्नओवर दर्ज हुआ। कमोडिटी वायदाओं में 15658.22 करोड़ रुपये का कारोबार हुआ, जबकि कमोडिटी ऑप्शंस में 62794.42 करोड़ रुपये का नॉशनल टर्नओवर हुआ। बुलियन इंडेक्स बुलडेक्स का फरवरी वायदा 39287 पॉइंट के स्तर पर कारोबार हो रहा था। कमोडिटी ऑप्शंस में कुल प्रीमियम टर्नओवर 1525.9 करोड़ रुपये का हुआ। कीमती धातुओं में सोना-चांदी के वायदाओं में 12597.20 करोड़ रुपये की खरीद बेच की गई। एमसीएक्स सोना अप्रैल वायदा सत्र के आरंभ में 156001 रुपये के भाव पर खूलकर, 158070 रुपये के दिन के उच्च और 156001 रुपये के नीचले स्तर को छूकर, 158066 रुपये के पिछले बंद के सामने 319 रुपये या 0.2 फीसदी लुढ़ककर 157747 रुपये प्रति 10 ग्राम बोला गया। गोल्ड-गिनी फरवरी वायदा 525 रुपये या 0.41 फीसदी घटकर 129085 रुपये प्रति 8 ग्राम के भाव पर ट्रेड हो रहा था। गोल्ड-पेटल फरवरी वायदा 24 रुपये या 0.15 फीसदी की गिरावट के साथ 16139 रुपये प्रति 1 ग्राम के भाव पर कारोबार कर रहा था। सोना-मिनी मार्च वायदा 155990 रुपये पर खूलकर, ऊपर में 156167 रुपये और नीचे में 155050 रुपये पर पहुंचकर, 268 रुपये या 0.17 फीसदी घटकर 156064 रुपये प्रति 10 ग्राम के भाव पर ट्रेड हो रहा था। गोल्ड-टेन फरवरी वायदा प्रति 10 ग्राम सत्र के आरंभ में 158650 रुपये के भाव पर खूलकर, 159211 रुपये के दिन के उच्च और 157663 रुपये के नीचले स्तर को छूकर, 159571 रुपये के पिछले बंद के सामने 626 रुपये या 0.39 फीसदी की गिरावट के साथ 158945 रुपये प्रति 10 ग्राम के भाव पर कारोबार कर रहा था। चांदी के वायदाओं में चांदी मार्च वायदा 259997 रुपये पर खूलकर, ऊपर में 261120 रुपये और नीचे में 256424 रुपये पर पहुंचकर, 262620 रुपये के पिछले बंद के सामने 2381 रुपये या 0.91 फीसदी गिरकर 260239 रुपये प्रति किलो के भाव पर पहुंचा। इनके अलावा चांदी-मिनी फरवरी वायदा 2427 रुपये या 0.9 फीसदी गिरकर 267943 रुपये प्रति किलो हुआ। जबकि चांदी-माइक्रो फरवरी वायदा 2493 रुपये या 0.92 फीसदी घटकर 267880 रुपये प्रति किलो के भाव पर ट्रेड हो रहा था। मेटल वर्ग में 1630.27 करोड़ रुपये के ट्रेड दर्ज हुए। तांबा फरवरी वायदा 6.6 रुपये या 0.53 फीसदी घटकर 1243.05 रुपये प्रति किलो के भाव पर ट्रेड हो रहा था। जबकि जस्ता फरवरी वायदा 40 पैसे या 0.12 फीसदी टूटकर 325.4 रुपये प्रति किलो के भाव पर पहुंचा। इसके सामने एल्यूमीनियम फरवरी वायदा 1.4 रुपये या 0.45 फीसदी औंधकर 311.4 रुपये प्रति किलो पर आ गया। जबकि सीसा फरवरी वायदा 5 पैसे या 0.03 फीसदी की नरमी के साथ 189.2 रुपये प्रति किलो के भाव पर कारोबार कर रहा था। इन जिंसों के अलावा कारोबारियों ने एनर्जी सेगमेंट में 1425.01 करोड़ रुपये के सौदे किए। एमसीएक्स क्रूड ऑयल फरवरी वायदा सत्र के आरंभ में 5832 रुपये के भाव पर खूलकर, 5864 रुपये के दिन के उच्च और 5811 रुपये के नीचले स्तर को छूकर, 43 रुपये या 0.73 फीसदी की गिरावट के साथ 5827 रुपये प्रति बैरल के भाव पर कारोबार कर रहा था। जबकि क्रूड ऑयल-मिनी फरवरी वायदा 39 रुपये या 0.66 फीसदी औंधकर 5830 रुपये प्रति बैरल पर आ गया। इनके अलावा नैचुरल गैस फरवरी वायदा 286 रुपये पर खूलकर, ऊपर में 286 रुपये और नीचे में 278.1 रुपये पर पहुंचकर, 287.5 रुपये के पिछले बंद के सामने 7.1 रुपये या 2.47 फीसदी गिरकर 280.4 रुपये प्रति एमएमबीटीयू के भाव पर पहुंचा। जबकि नैचुरल गैस-मिनी फरवरी वायदा 7 रुपये या 2.43 फीसदी की गिरावट के साथ 280.7 रुपये प्रति एमएमबीटीयू के भाव पर कारोबार कर रहा था। कृषि जिंसों में मेंथा ऑयल फरवरी वायदा सत्र के आरंभ में 974.9 रुपये के भाव पर खूलकर, 1.8 रुपये या 0.19 फीसदी लुढ़ककर 968.1 रुपये प्रति किलो बोला गया।

कारोबार की दृष्टि से एमसीएक्स पर सोना के विभिन्न अनुबंधों में 7471.43 करोड़ रुपये और चांदी के विभिन्न अनुबंधों में 5125.78 करोड़ रुपये की खरीद बेच की गई। इसके अलावा तांबा के वायदाओं में 1255.36 करोड़ रुपये, एल्यूमीनियम और एल्यूमीनियम-मिनी के वायदाओं में 174.02 करोड़ रुपये, सीसा और सीसा-मिनी के वायदाओं में 8.93 करोड़ रुपये, जस्ता और जस्ता-मिनी के वायदाओं में 191.96 करोड़ रुपये का कारोबार हुआ।

इन जिंसों के अलावा क्रूड ऑयल और क्रूड ऑयल-मिनी के वायदाओं में 599.80 करोड़ रुपये के ट्रेड दर्ज हुए। जबकि नैचुरल गैस और नैचुरल गैस-मिनी के वायदाओं में 811.24 करोड़ रुपये का कारोबार हुआ। ओपन इंटरेस्ट सोना के वायदाओं में 9005 लोट, सोना-मिनी के वायदाओं में 61737 लोट, गोल्ड-गिनी के वायदाओं में 31903 लोट, गोल्ड-पेटल के वायदाओं में 420881 लोट और गोल्ड-टेन के वायदाओं में 53894 लोट के स्तर पर था। जबकि चांदी के वायदाओं में 8792 लोट, चांदी-मिनी के वायदाओं में 19289 लोट और चांदी-माइक्रो वायदाओं में 61391 लोट के स्तर पर था। क्रूड ऑयल के वायदाओं में 18393 लोट और नैचुरल गैस के वायदाओं में 22052 लोट के स्तर पर था।

इंडेक्स फ्यूचर्स में बुलडेक्स फरवरी वायदा सत्र के आरंभ में 39105 पॉइंट पर खूलकर, 39287 के उच्च और 38994 के नीचले स्तर को छूकर, 114 पॉइंट बढ़कर 39287 पॉइंट के स्तर पर कारोबार हो रहा था।

कमोडिटी ऑप्शंस ऑन फ्यूचर्स में क्रूड ऑयल फरवरी 5800 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति बैरल 23.6 रुपये की गिरावट के साथ 204.5 रुपये हुआ। जबकि नैचुरल गैस फरवरी 280 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति एमएमबीटीयू 4.5 रुपये की गिरावट के साथ 20.15 रुपये हुआ।

सोना फरवरी 160000 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति 10 ग्राम 678 रुपये की गिरावट के साथ 4421 रुपये हुआ। इसके सामने चांदी फरवरी 400000 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति किलो 479.5 रुपये की गिरावट के साथ 935 रुपये हुआ। तांबा फरवरी 1300 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति किलो 6.33 रुपये की गिरावट के साथ 11.25 रुपये हुआ। जस्ता फरवरी 340 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति किलो 71 पैसे की नरमी के साथ 1.5 रुपये हुआ।

पुट ऑप्शंस में क्रूड ऑयल फरवरी 5800 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का पुट ऑप्शन प्रति बैरल 23.3 रुपये की बढ़त के साथ 183.2 रुपये हुआ। जबकि नैचुरल गैस फरवरी 280 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का पुट ऑप्शन प्रति एमएमबीटीयू 2.8 रुपये की बढ़त के साथ 19.6 रुपये हुआ।

सोना फरवरी 155000 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का पुट ऑप्शन प्रति 10 ग्राम 494 रुपये की गिरावट के साथ 3830 रुपये हुआ। इसके सामने चांदी फरवरी 250000 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का पुट ऑप्शन प्रति किलो 1101 रुपये की गिरावट के साथ 14700 रुपये हुआ। तांबा फरवरी 1200 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का पुट ऑप्शन प्रति किलो 2.96 रुपये की गिरावट के साथ 13.24 रुपये हुआ। जस्ता फरवरी 300 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का पुट ऑप्शन प्रति किलो 24 पैसे की नरमी

भक्ति, संस्कृति एवं प्रकृति के संगम के साथ 11 फरवरी से गिरनार की तलहटी में भवनाथ मंदिर पर ध्वजारोहण के साथ महाशिवरात्रि मेले का विधिवत प्रारंभ होगा

▸▸ उप मुख्यमंत्री श्री हर्ष संघवी की उपस्थिति में पवित्र साधु संतों का भव्य नगर प्रवेश कराया जाएगा
▸▸ श्रद्धालुओं को सभी सुविधा प्रदान करने के लिए राज्य सरकार सज्ज

▸▸ सांस्कृतिक विरासत को प्रज्वलित करने के लिए इस वर्ष पहली बार भव्य 'डमरू यात्रा' का आयोजन
▸▸ सर्व समाज की बेटियां कलश धारण कर संतों का स्वागत करेंगी
▸▸ 800 से अधिक भक्तों के रहने के लिए आराम दायक सुविधा
▸▸ 25 स्थानों पर वाहनों के लिए सुरक्षित पार्किंग की व्यवस्था

जीएनएस)। गांधीनगर : देवाधिदेव महादेव के सानिध्य में भक्ति, संस्कृति तथा प्रकृति के संगम के साथ जूनागढ के पवित्र भवनाथ गिरनार की तलहटी में परंपरागत रूप से विश्व प्रसिद्ध 'महाशिवरात्रि मेले' का आयोजन होगा। इस वर्ष आगामी 11 फरवरी से भवनाथ मंदिर पर ध्वजारोहण के साथ महाशिवरात्रि मेले का विधिवत् प्रारंभ होगा। पांच दिनों तक आयोजित होने वाले इस अलौकिक मेले में आने वाले श्रद्धालुओं को किसी भी प्रकार की असुविधा न हो, इसके लिए मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल और उप मुख्यमंत्री श्री हर्ष संघवी के मार्गदर्शन में गुजरात पवित्र यात्राधाम विकास बोर्ड और स्थानीय प्रशासन द्वारा विभिन्न सुविधाओं के साथ विशेष आयोजन किया गया है।

जूनागढ के सुप्रसिद्ध महाशिवरात्रि मेले की आध्यात्मिक और सांस्कृतिक विरासत को उजागर करने के लिए इस वर्ष पहली बार भव्य 'डमरू यात्रा' का आयोजन किया गया है, जिसमें उप मुख्यमंत्री भी सहभागिता करेंगे। इतिहास में पहली बार सर्व समाज की बेटियां कलश धारण कर संतों का स्वागत करेंगी। इस भव्य डमरू यात्रा मेले के पहले दिन, यानी 11 फरवरी को शाम 7 बजे भवनाथ प्रवेश द्वार से शुरू होकर भवनाथ मंदिर तक लगभग 400 मीटर के मार्ग पर भक्तिमय वातावरण में निकलेगी। यात्रा के समापन के बाद भवनाथ मंदिर में भव्य महाआरती का भी सुंदर आयोजन किया गया है।

गुजरात पवित्र यात्राधाम विकास बोर्ड द्वारा यात्रियों के रात्रि विश्राम को आरामदायक बनाने के लिए 800–850 भक्तों की क्षमता वाला विशाल

जर्मन डोम तैयार किया गया है। भक्तों के लिए 2,000 वर्गमीटर में फैले इस डोम में 700 पलंग और 150 फ्लोर बेडिंग की व्यवस्था की गई है। इसके साथ ही 24×7 हाउसकीपिंग, मेडिकल सहायता, मोबाइल चार्जिंग पॉइंट्स और सामान रखने के लिए अलग लगेज रैक जैसी सुविधाएं भी उपलब्ध कराई गई हैं। मेले में आने वाले नागरिकों के वाहनों के व्यवस्था के लिए उपरकोट, पांजरापोळ, वाघेश्वरी मंदिर जैसे 25 अलग- अलग स्थलों पर विशाल पार्किंग प्लोट्स बनाए गए है। नागरिकों के वाहनों की सुरक्षा के लिए प्रत्येक पार्किंग में सीसीटीवी कैमरा, पीने का पानी तथा शौचालय की भी व्यवस्था की गई है।

मेले के मार्गों और मंदिरों को और अधिक भक्तिमय बनाया जाएगा। जिसमें समग्र भवनाथ मेला क्षेत्र को 'भगवान भोलेनाथ' की थीम पर सजाया जाएगा। भवनाथ मंदिर का फूलों से श्रृंगार और पूरे रवेडी मार्ग पर आकर्षक रोशनी की जाएगी। भवनाथ मंदिर, अखाड़े, दामोदर कुंड और 6 मुख्य प्रवेश द्वारों को आकर्षक रोशनी से जगमगाया जाएगा। मेले के रास्ते में 6 सेल्फी प्वाइंट आकर्षण का केंद्र बनेंगे। इसके अलावा पूरे मेला क्षेत्र में भगवान शंकर के कलात्मक चित्र भी उकेरे गए हैं। गिरनार द्वार से भवनाथ मंदिर तक के मार्ग पर सजावट और लाइटिंग भी की गई है।

भवनाथ तथा उसके आसपास के क्षेत्रों में श्रद्धालुओं और पर्यटकों की सुविधा के लिए विभिन्न आधुनिक व्यवस्थाएं स्थापित की गई हैं। इसके अंतर्गत; पीने के शुद्ध पानी के लिए भवनाथ में 140 परब की व्यवस्था की गई है। पर्यावरण संरक्षण के लिए 10 बोतल क्रशर मशीन और किसी भी चिकित्सा आवश्यकता को पूरा करने के लिए 28 मेडिकल सुविधा काउंटर भी कार्यरत किए गए हैं। इसके अलावा, मेले के दौरान कुल 118 अस्थायी शौचालय तथा भवनाथ क्षेत्र में 6 मोबाइल शौचालय की व्यवस्था भी की गई है। इसमें पुरुषों और महिलाओं के लिए अलग व्यवस्था तथा 24×7 हाउसकीपिंग की सुविधा उपलब्ध रहेगी।

इन सभी पार्किंग स्थलों पर फ्लड लाइट, सैनिटेशन, सफाई, पीने के पानी की व्यवस्था तथा राउंड द क्लॉक पुलिस बंदोबस्त रहेगा। इसके लिए जिला स्तर पर पार्किंग समिति का गठन किया गया है। इन पार्किंग स्थलों से मुख्य दो प्वाइंट भरडावाव और गिरनार द्वार से श्रद्धालु भवनाथ की ओर प्रस्थान करेंगे। पार्किंग स्थलों से विशेष रूप से दिव्यांगों को मेले तक पहुंचाने के लिए लगभग 25 रिक्षाओं द्वारा निःशुल्क परिवहन सुविधा प्रदान करने का आयोजन किया है।

स्थानीय प्रशासन द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम, लाइट एंड साउंड शो और सुरक्षा के लिए बैरिकेडिंग की व्यवस्था की गई है। महाशिवरात्रि की रात्रि में आयोजित होने वाली साधु-संतों की शाही रवेड़ी और मृगीकुंड में शाही स्नान मेले का मुख्य आकर्षण रहेगा।

'अतिथि देवो भवः' की भावना के साथ राज्य सरकार महाशिवरात्रि मेले को भक्ति, शक्ति और सुविधाओं का त्रिवेणी संगम बनाकर श्रद्धालुओं का स्वागत करने के लिए संपूर्ण सज्ज है।

पश्चिम रेलवे द्वारा बांद्रा टर्मिनस–ओखा के बीच साप्ताहिक स्पेशल ट्रेन के फेरे विस्तारित

जीएनएस)। पश्चिम रेलवे द्वारा यात्रियों की सुविधा तथा यात्रियों की अतिरिक्त यात्री भीड़ को समायोजित करने के उद्देश्य से बांद्रा टर्मिनस और ओखा के बीच साप्ताहिक स्पेशल ट्रेन के फेरों को विस्तारित किया गया है।

पश्चिम रेलवे के मुख्य जनसंपर्क अधिकारी श्री विनीत अभिषेक द्वारा जारी एक प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार, ट्रेन संख्या 09561 बांद्रा टर्मिनस–ओखा साप्ताहिक स्पेशल को 01 अप्रैल 2026 तक विस्तारित किया गया है। इसी प्रकार, ट्रेन संख्या 09562 ओखा–बांद्रा टर्मिनस साप्ताहिक स्पेशल को 31 मार्च 2026 तक विस्तारित किया गया है।

ट्रेन संख्या 09561 एवं 09562 के विस्तारित फेरों की बुकिंग सभी पीआरएस काउंटरों और आईआरसीटीसी वेबसाइट पर शुरू है। ट्रेनों के ठहराव के समय और संरचना के संबंध में विस्तृत जानकारी के लिए यात्री कृपया www.enquiry.indianrail.gov.in पर जाकर अवलोकन कर सकते हैं।

पश्चिम रेलवे चलाएगी तीन जोड़ी होली स्पेशल ट्रेनें

जीएनएस)। पश्चिम रेलवे द्वारा यात्रियों की सुविधा एवं होली त्योहार के दौरान यात्रियों की अतिरिक्त यात्रा मांग को ध्यान में रखते हुए, बांद्रा टर्मिनस–वीरांगना लक्ष्मीबाई झांसी, बांद्रा टर्मिनस–सूबेदारगंज तथा असारवा–आगरा कैंट के बीच विशेष किराए पर तीन जोड़ी होली स्पेशल ट्रेनें चलाई जाएंगी।

पश्चिम रेलवे के मुख्य जनसंपर्क अधिकारी श्री विनीत अभिषेक द्वारा जारी एक प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार, इन ट्रेनों का विवरण निम्नानुसार हैः

1. ट्रेन संख्या 02200/02199 बांद्रा टर्मिनस–वीरांगना लक्ष्मीबाई झांसी सुपरफास्ट साप्ताहिक स्पेशल (08 फेरे)
ट्रेन संख्या 02200 बांद्रा टर्मिनस – वीरांगना लक्ष्मीबाई झांसी स्पेशल प्रत्येक शनिवार को बांद्रा टर्मिनस से 05.10 बजे प्रस्थान करेगी तथा अगले दिन 05.00 बजे वीरांगना लक्ष्मीबाई झांसी पहुंचेगी। यह ट्रेन 07 मार्च से 28 मार्च, 2026 तक चलेगी। इसी प्रकार, ट्रेन संख्या 02199 वीरांगना लक्ष्मीबाई झांसी – बांद्रा टर्मिनस स्पेशल प्रत्येक गुरुवार को वीरांगना लक्ष्मीबाई झांसी से 16.50 बजे प्रस्थान करेगी तथा अगले दिन 16.10 बजे बांद्रा टर्मिनस पहुंचेगी। यह ट्रेन 05 मार्च से 26 मार्च, 2026 तक चलेगी।
यह ट्रेन दोनों दिशाओं में बोरीवली, वापी, उधना, भरूच, वडोदरा, गोधरा, दाहोद, रतलाम, नागदा, उज्जैन, मक्सी, बियावरा

राजगढ़, चाचुरा बिनागंज, रूठियाई, गुना, शिवपुरी, ग्वालियर, डबरा एवं दतिया स्टेशनों पर ठहरेगी।
इस ट्रेन में एसी 2-टियर, एसी 3-टियर, एसी 3-टियर (इकोनॉमी), स्लीपर क्लास एवं जनरल सकेंड क्लास कोच होंगे।
2. ट्रेन संख्या 04126/04125 बांद्रा टर्मिनस – सूबेदारगंज सुपरफास्ट साप्ताहिक स्पेशल (10 फेरे)
ट्रेन संख्या 04126 बांद्रा टर्मिनस–सूबेदारगंज सुपरफास्ट स्पेशल प्रत्येक मंगलवार को बांद्रा टर्मिनस से 11.15 बजे प्रस्थान करेगी तथा अगले दिन 17.00 बजे सूबेदारगंज पहुंचेगी। यह ट्रेन 03 मार्च से 31 मार्च, 2026 तक चलेगी। इसी प्रकार, ट्रेन संख्या 04125 सूबेदारगंज–बांद्रा टर्मिनस सुपरफास्ट स्पेशल प्रत्येक सोमवार को सूबेदारगंज से 05.20 बजे प्रस्थान करेगी तथा अगले दिन 09.30 बजे बांद्रा टर्मिनस पहुंचेगी। यह ट्रेन 02 मार्च से 30 मार्च, 2026 तक चलेगी।
यह ट्रेन दोनों दिशाओं में बोरीवली, वापी, सूरत, वडोदरा, रतलाम, कोटा, सवाई माधोपुर, गंगापुर सिटी, बयाना, रूपबास, फतेहपुर सीकरी, आगरा ईदगाह, टूंडला, इटावा, गोविंदपुरी एवं फतेहपुर स्टेशनों पर ठहरेगी।
इस ट्रेन में एसी 3-टियर, एसी 3-टियर (इकोनॉमी), स्लीपर क्लास एवं जनरल सकेंड क्लास कोच होंगे।
3. ट्रेन संख्या 01920/01919 असारवा – आगरा कैंट स्पेशल (सप्ताह में 5 दिन) [42 फेरे]
ट्रेन संख्या 01920 असारवा – आगरा कैंट स्पेशल मंगलवार एवं बुधवार को छोड़कर प्रतिदिन असारवा से 14.50 बजे प्रस्थान करेगी तथा अगले दिन 07.45 बजे आगरा कैंट पहुंचेगी। यह ट्रेन 02 मार्च से 30 मार्च, 2026 तक चलेगी। इसी प्रकार, ट्रेन संख्या 01919 आगरा कैंट–असारवा स्पेशल सोमवार एवं मंगलवार को छोड़कर प्रतिदिन आगरा कैंट से 18.10 बजे प्रस्थान करेगी तथा अगले दिन 11.10 बजे असारवा पहुंचेगी। यह ट्रेन 01 मार्च से 29 मार्च, 2026 तक चलेगी।
यह ट्रेन दोनों दिशाओं में हिम्मतनगर, शामलाजी रोड, डूंगरपुर, सेमारी, जावर, उदयपुर सिटी, राणा प्रताप नगर, मावली जं., चंदेरिया, मांडलगढ़, बूंदी, केशोराय पाटन, सवाई माधोपुर, गंगापुर सिटी, रूपबास एवं फतेहपुर सीकरी स्टेशनों पर ठहरेगी।
इस ट्रेन में एसी 3-टियर, स्लीपर क्लास एवं जनरल सकेंड क्लास कोच होंगे।
ट्रेन संख्या 02200, 04126 एवं 01920 की बुकिंग सभी पीआरएस काउंटरों तथा आईआरसीटीसी वेबसाइट पर 11 फरवरी, 2026 से शुरू होगी। ट्रेनों के ठहराव, समय एवं संरचना से संबंधित विस्तृत जानकारी के लिए यात्री कृपया www.enquiry.indianrail.gov.in पर जाकर अवलोकन कर सकते हैं।

भारतीय रेल पहली बार स्टेनलेस स्टील कंटेनर से करेगी औद्योगिक नमक का परिवहन

गांधीधाम क्षेत्र से स्टेनलेस स्टील कंटेनर में औद्योगिक नमक का ऐतिहासिक लदान

जीएनएस)। पश्चिम रेलवे के गांधीधाम क्षेत्र ने माल परिवहन के क्षेत्र में एक ऐतिहासिक उपलब्धि दर्ज की है। विश्व में पहली बार भारतीय रेलवे द्वारा स्टेनलेस स्टील कंटेनर में औद्योगिक नमक का सफलतापूर्वक लदान गांधीधाम के नीलकंठ ज़ोन से किया गया। यह नवाचारपूर्ण पहल औद्योगिक थोक माल के सुरक्षित, स्वच्छ एवं उच्च दक्षता वाले परिवहन की दिशा में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर सिद्ध हुई है। माननीय रेलमंत्री श्री अश्विनी वैष्णव जी ने x पर पोस्ट कर से इस अभिनव पहल की सराहना की।

अहमदाबाद मंडल के मंडल रेल प्रबंधक (डीआरएम) ने कहाः कि स्टेनलेस स्टील कंटेनर में औद्योगिक नमक का यह सफल परीक्षण भारतीय रेलवे की नवाचार-आधारित लॉजिस्टिक्स रणनीति का उत्कृष्ट उदाहरण है। इससे न केवल संवेदनशील थोक माल का सुरक्षित और स्वच्छ परिवहन संभव होगा, बल्कि उद्योगों को तेज़, भरोसेमंद और पर्यावरण-अनुकूल फ्रेट समाधान भी प्राप्त होंगे। पश्चिम रेलवे 'फ्रेट ऑन रेल' को बढ़ावा देने के लिए भविष्य में भी ऐसी अभिनव पहलों को निरंतर आगे बढ़ाती रहेगी।"

तेज़ और अत्यंत कुशल परीक्षण

इस परीक्षण (ट्रायल) के दौरान 34.2 टन औद्योगिक नमक की लोडिंग मात्र 15 मिनट में पूर्ण की गई, जबकि अनलोडिंग का कार्य केवल 5 मिनट में संपन्न हुआ। यह उपलब्धि रेलवे फ्रेट लॉजिस्टिक्स

में त्वरित टर्नअराउंड समय और उच्च परिचालन दक्षता को दर्शाती है। लोडिंग कार्य कांडला विशेष आर्थिक क्षेत्र (KASEZ) के समीप स्थित वे-ब्रिज (Weigh Bridge) पर सफलतापूर्वक संपन्न किया गया।

तकनीकी विवरण

▸▸ कंटेनर प्रकारः स्टेनलेस स्टील कंटेनर
▸▸ लंबाईः 20 फीट
▸▸ ऊँचाईः 8.5 फीट
▸▸ चौड़ाईः 8.5 फीट

यह कंटेनर स्टेनलेस स्टील से निर्मित है तथा नमक एवं अन्य संक्षारक (corrosive) थोक वस्तुओं के परिवहन के लिए उपयुक्त है। इसकी उच्च जंग-रोधी क्षमता कंटेनर की लंबी आयु एवं माल की सुरक्षा सुनिश्चित करती है। लदान की व्यवस्था साइलो प्रणाली अथवा ऊपर से प्रोकेलिन (Proclain) मशीन द्वारा की जा सकती है। प्रत्येक कंटेनर में 7 फीट × 4 फीट आकार के दो टॉप ओपनिंग दिए गए हैं, जिससे तेज़ यंत्रीकृत लदान संभव होता है।

प्रत्येक कंटेनर का टेयर वजन 3 टन है। एक BLCS/BLSS वैगन में दो कंटेनर लोड किए जा सकते हैं, जिससे प्रति वैगन 68.4 टन शुद्ध पेलोड प्राप्त होता है, जो BOXN खुले वैगनों के समकक्ष है। 48 वैगनों की एक पूर्ण BLSS रेक द्वारा लगभग 3,300 टन नमक का परिवहन किया जा सकता है।

लॉजिस्टिक्स क्षेत्र में नई दिशा

स्टेनलेस स्टील कंटेनर के उपयोग से औद्योगिक नमक जैसे थोक माल के परिवहन में निम्नलिखित लाभ सुनिश्चित किए जा सकते हैंः

▸▸ सुरक्षित एवं क्षरण-रहित परिवहन
▸▸ तेज़ लोडिंग और अनलोडिंग प्रक्रिया
▸▸ प्रदूषण-रहित एवं स्वच्छ हैंडलिंग
▸▸ कम टर्नअराउंड समय एवं बेहतर लॉजिस्टिक दक्षता

यह प्रणाली पारंपरिक BOXN लदान की तुलना में कई लाभ प्रदान करती है। इसमें वैगन की मैनुअल सफाई की आवश्यकता नहीं होती, तिरपाल लाइनिंग/कोटिंग की जरूरत समाप्त हो जाती है, लदान एवं उतारने का समय काफी कम होता है, माल की मिलावट एवं अपव्यय न्यूनतम होता है तथा वैगनों का टर्नअराउंड टाइम बेहतर होता है। इससे परिचालन दक्षता और यंत्रीकरण को बढ़ावा मिलता है।

नमक जैसे सूखे थोक माल के परिवहन हेतु स्टेनलेस स्टील कंटेनरों का यह उपयोग विश्व स्तर पर अपनी तरह का पहला प्रयास है, जो भारतीय रेल में कंटेनर आधारित थोक लॉजिस्टिक्स के क्षेत्र में एक बड़ी नवाचारी पहल है।

गांधीधाम से आदिपुर के बीच 120 KMPH के स्पीड से चली ट्रेन, महावीर चक्र कैप्टन कपिल सिंह थापा इंजन के साथ

कांडला पोर्ट और मुंद्रा पोर्ट से मालवाहक ट्रेनों की रफ्तार दोगुनी

जीएनएस)। पश्चिम रेलवे के गांधीधाम–आदिपुर रेलखंड के बीच चौहरीकरण तथा आदिपुर स्टेशन पर 'वाई' कनेक्टिविटी का कार्य पूर्ण हो गया है। इस रेल खंड का 9 और 10 फरवरी 2026 को रेल संरक्षा आयुक्त (CRS) पश्चिम सर्कल श्री ई. श्रीनिवास द्वारा संरक्षा निरीक्षण किया गया तथा 10 फरवरी को गांधीधाम से आदिपुर के बीच ट्रेन का 120 किमी प्रति घंटे की गति से स्पीड ट्रायल सफलतापूर्वक किया गया। गांधीधाम–आदिपुर रेलखंड के बीच चौहरीकरण तथा आदिपुर स्टेशन पर 'वाई' कनेक्टिविटी का कार्य पूर्ण होने से वर्तमान में जहां 50 से 60 मालगाड़ियों का संचालन इस क्षेत्र से हो रहा है जो बढ़कर 150 तक हो जाएगा तथा ट्रेनें 120 किमी प्रति घंटे (अधिकतम) की गति से चलाई जा सकेगी।

गांधीधाम–आदिपुर ब्रॉडगेज रेलखंड कांडला एवं मुंद्रा बंदरगाहों सहित भुज, वायोर और अन्य क्षेत्रों को देश के विभिन्न भागों से जोड़ने वाला एक अत्यंत महत्वपूर्ण माल ढुलाई मार्ग है। वर्तमान में यह खंड अत्यधिक व्यस्त रहने से परिचालन पर दबाव बना रहता है, जिसे कम करने के लिए दो अतिरिक्त लाइनों की आवश्यकता थी। इस मार्ग से नमक एवं अन्य माल की भी बड़े पैमाने पर ढुलाई होती है और मुंद्रा बंदरगाह की बढ़ती क्षमता को देखते हुए भविष्य में यातायात और बढ़ने की संभावना है।

इस परियोजना से कांडला एवं मुंद्रा बंदरगाहों से जुड़े कंटेनर, पेट्रोलियम, उर्वरक, खाद्यान्न एवं अन्य माल के परिवहन में तेजी आएगी। मालगाड़ियों का टर्नअराउंड समय कम होगा, वैगनों का बेहतर उपयोग संभव होगा तथा लॉजिस्टिक लागत में कमी आएगी, जिससे उद्योगों और व्यापार को सीधा लाभ मिलेगा। साथ ही यह परियोजना कच्छ क्षेत्र के औद्योगिक विकास को गति देने, व्यापार, पर्यटन एवं रोजगार के अवसर बढ़ाने तथा निवेश के अनुकूल वातावरण बनाने में सहायक सिद्ध होगी।

गोपालपुर नए स्टेशन के निर्माण से अहमदाबाद की ओर से आने वाली गाड़ियों को भुज जाने के लिए गांधीधाम में इंजन रिवर्सल की आवश्यकता नहीं होगी, जिससे लगभग 20-25 मिनट की समय बचत होगी। आदिपुर स्टेशन पर 'वाई' कनेक्टिविटी उपलब्ध होने से ट्रेनों को दिशा परिवर्तन नहीं करना पड़ेगा, जिससे समय एवं ईंधन दोनों की बचत होगी और परिचालन सरल बनेगा।

गांधीधाम–आदिपुर चौहरीकरण एवं 'वाई' कनेक्टिविटी परियोजना क्षेत्रीय विकास और सुदृढ़ रेल अवसंरचना की दिशा में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है, जो कच्छ क्षेत्र के सामाजिक–आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण योगदान देगी।

मुंबई फ्लावर शो 2026 में पश्चिम रेलवे की शानदार उपलब्धि,चार ट्रॉफियों सहित "बॉम्बारसी" के लिए प्रथम पुरस्कार भी प्राप्त किया

जीएनएस)। बृहन्मुंबई महानगरपालिका (बीएमसी) एवं ट्री अथॉरिटी द्वारा 06 फरवरी से 08 फरवरी 2026 तक वीरमाता जीजाबाई भोसले वनस्पति उद्यान एवं प्राणिसंग्रहालय, मुंबई में आयोजित मुंबई फ्लावर शो 2026 में पश्चिम रेलवे ने चार ट्रॉफियां जीतकर उल्लेखनीय उपलब्धि हासिल की। इस वार्षिक आयोजन में पश्चिम रेलवे ने अनेक प्रतिष्ठित सार्वजनिक एवं निजी क्षेत्र की संस्थाओं के साथ भाग लिया और विभिन्न श्रेणियों में सम्मान प्राप्त किया। पश्चिम रेलवे के मुख्य जनसंपर्क अधिकारी श्री विनीत अभिषेक द्वारा जारी एक प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार, मुंबई फ्लावर शो के 29वें संस्करण में मध्य रेल, गोदरेज, बीपीसीएल, एचपीसीएल, आरसीएफ, हीरानंदानी, एमएमआरडीए, मुंबई अंतरराष्ट्रीय एयर पोर्ट सहित अनेक संस्थाओं ने भाग लिया। पश्चिम रेलवे ने अपने आकर्षक पुष्प सज्जा एवं थीम आधारित प्रदर्शनों को प्रस्तुत किया और विभिन्न श्रेणियों में कुल चार ट्रॉफियां जीतीं। ये ट्रॉफियां बृहन्मुंबई महानगरपालिका के गणमान्य अधिकारियों द्वारा प्रदान की गईं, जिनमें पश्चिम रेलवे के महाप्रबंधक

का आवास "बॉम्बारसी" स्थित उद्यान के लिए गार्डेन श्रेणी में प्राप्त प्रथम पुरस्कार भी शामिल है।

पश्चिम रेलवे नियमित रूप से मुंबई फ्लावर शो तथा इस प्रकार की अन्य नागरिक पहलों में भाग लेता रहा है, जो रचनात्मकता के प्रदर्शन, हरियाली को बढ़ावा देने तथा आम जनता से जुड़ने का अवसर प्रदान करती हैं। यह सहभागिता पश्चिम रेलवे द्वारा पर्यावरण जागरूकता एवं सौंदर्यीकरण पहलों पर निरंतर दिए जा रहे जोर को भी दर्शाती है।

पश्चिम रेलवे पर्यावरण-अनुकूल पहलों के समर्थन तथा पर्यावरण चेतना और सामुदायिक सहभागिता को बढ़ावा देने वाले कार्यक्रमों में सक्रिय भागीदारी के प्रति प्रतिबद्ध है।

पश्चिम रेलवे के महाप्रबंधक ने ऑल इंडिया इंटर रेलवे संगीत प्रतियोगिता के विजेता कलाकारों को किया सम्मानित

जीएनएस)। पश्चिम रेलवे के महाप्रबंधक (प्रभारी) श्री प्रदीप कुमार ने ऑल इंडिया इंटर रेलवे सांस्कृतिक संगीत प्रतियोगिता में विजयी रहे पश्चिम रेलवे के कर्मचारियों को सम्मानित किया। इस प्रतियोगिता में पश्चिम रेलवे द्वारा ओवरऑल चैंपियन ट्रॉफी भी गर्वपूर्वक अर्जित की गई, जो पश्चिम रेलवे के कर्मचारियों में निहित समृद्ध सांस्कृतिक प्रतिभा को दर्शाती है।

पश्चिम रेलवे के मुख्य जनसंपर्क अधिकारी श्री विनीत अभिषेक द्वारा जारी एक प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार, चर्चगेट स्थित मुख्यालय के श्री चैतन्य परब ने शास्त्रीय गायन श्रेणी में प्रथम पुरस्कार प्राप्त किया, जबकि श्रीमती प्रेरणा बाजे ने सुगम संगीत गायन श्रेणी में द्वितीय स्थान हासिल किया। श्री विनीत अभिषेक ने आगे बताया कि महाप्रबंधक ने पुरस्कार विजेता कर्मचारियों एवं संपूर्ण टीम को उनकी सराहनीय

उपलब्धियों के लिए बधाई दी तथा राष्ट्रीय स्तर पर पश्चिम रेलवे का नाम रोशन करने हेतु उनके समर्पण की प्रशंसा की। उन्होंने पश्चिम रेलवे की सांस्कृतिक टीम के सामूहिक प्रयासों की भी सराहना की, जिसके परिणामस्वरूप पश्चिम रेलवे को ओवरऑल चैंपियन ट्रॉफी प्राप्त हुई।

पश्चिम रेलवे अपने कर्मचारियों को सांस्कृतिक उत्कृष्टता प्राप्त करने एवं राष्ट्रीय मंचों पर अपनी प्रतिभा प्रदर्शित करने हेतु निरंतर प्रोत्साहित एवं सहयोग प्रदान करती रही है।

विदेशी पूंजी की वापसी से बाजार में नई जान, फरवरी में एफआईआई की जोरदार खरीदारी से निवेशकों का बढ़ा भरोसा

(जीएनएस)। नई दिल्ली। पिछले कई महीनों से विदेशी बिकवाली के दबाव में रहे भारतीय शेयर बाजार में अब मजबूती के संकेत दिखाई देने लगे हैं। विदेशी संस्थागत निवेशकों (एफआईआई) ने फरवरी 2026 में भारतीय इक्विटी बाजार में दो अरब डॉलर से अधिक की शुद्ध खरीदारी दर्ज की है, जिससे बाजार में सकारात्मक माहौल बना है। वर्ष 2025 के दौरान लगातार बिकवाली करने वाले विदेशी निवेशकों का यह बदला हुआ रुख बाजार के लिए महत्वपूर्ण माना जा रहा है और इसे हालिया तेजी की बड़ी वजहों में गिना जा रहा है। आंकड़ों के अनुसार फरवरी के शुरुआती कारोबारी दिनों में एफआईआई ने सक्रिय रूप से बाजार में खरीदारी की। एक फरवरी से अब तक के आठ सत्रों में से छह सत्रों में उन्होंने शुद्ध खरीदारी की, जबकि केवल दो सत्रों में बिकवाली की। यह बदलाव ऐसे समय आया है जब बीते महीनों की गिरावट और दबाव के कारण भारतीय बाजार का मूल्यांकन अपेक्षाकृत संतुलित स्तर पर पहुंच गया था। विशेषज्ञों का मानना है कि आकर्षक वैल्यूएशन और स्थिर होती वैश्विक परिस्थितियों ने विदेशी निवेशकों को दोबारा भारतीय बाजार की ओर आकर्षित किया है। वर्तमान में सेंसेक्स अपने एक वर्ष के फॉरवर्ड प्राइस-टू-अर्निंग (पीई) अनुपात के लगभग 20.5 गुना पर कारोबार कर रहा है, जबकि निफ्टी करीब 20.1 गुना के स्तर पर है। ये दोनों सूचकांक अपने दस वर्षीय औसत के आसपास बने हुए हैं। व्यापक बाजार में बीएसई मिडकैप इंडेक्स का फॉरवर्ड पीई लगभग 28 गुना है, जो इसके दीर्घकालिक औसत से थोड़ा अधिक है, लेकिन इसे अत्यधिक महंगा नहीं माना जा रहा। विश्लेषकों का कहना है कि पिछले एक वर्ष में आई गिरावट और उतार-चढ़ाव के बाद बाजार का मूल्यांकन अब अधिक संतुलित और निवेश योग्य दिखाई दे रहा है।

पिछले वर्ष विदेशी निवेशकों ने भारतीय बाजार से बड़े पैमाने पर पूंजी निकाली थी। अक्टूबर 2024 से शुरू हुई बिकवाली का सिलसिला 2025 के अधिकांश समय तक जारी रहा और वर्ष 2025 में ही लगभग 18.88 अरब डॉलर की शुद्ध निकासी दर्ज की गई। ऊंचे वैल्यूएशन, कमजोर कॉरपोरेट आय वृद्धि, अमेरिकी टैरिफ नीतियों की अनिश्चितता और डॉलर की मजबूती ने विदेशी निवेशकों को सतर्क बनाए रखा था। मजबूत डॉलर और ऊंची अमेरिकी बॉन्ड यील्ड्स के कारण उभरते बाजारों से पूंजी का प्रवाह प्रभावित हुआ, जिसका असर भारतीय बाजार पर भी पड़ा। हालांकि अब परिस्थितियां कुछ हद तक अनुकूल होती दिख रही हैं। भारत और अमेरिका के बीच हुए व्यापार समझौते ने वैश्विक व्यापारिक अनिश्चितताओं को कम करने में मदद की है। अमेरिकी बॉन्ड यील्ड्स में स्थिरता और वैश्विक बाजारों में जोखिम लेने की बढ़ती प्रवृत्ति ने भी विदेशी निवेशकों का विश्वास लौटाने में भूमिका निभाई है। एशिया के अन्य बाजारों की तुलना में भारत का वैल्यूएशन प्रीमियम भी घटकर अपने दीर्घकालिक औसत के करीब आ गया है, जिससे निवेशकों को बेहतर जोखिम-प्रतिफल संतुलन दिखाई दे रहा है।

विशेषज्ञों का मानना है कि विदेशी निवेशकों की यह वापसी अभी प्रारंभिक संकेत है और इसकी स्थिरता कई कारकों पर निर्भर करेगी। आने वाले महीनों में कॉरपोरेट आय के नतीजे, वैश्विक ब्याज दरों का रुख, कच्चे तेल की कीमतें और भू-राजनीतिक परिस्थितियां महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगी। यदि घरेलू अर्थव्यवस्था मजबूत बनी रहती है और कंपनियों की आय में सुधार देखने को मिलता है, तो विदेशी पूंजी का प्रवाह और मजबूत हो सकता है। फिलहाल फरवरी में दर्ज की गई दो अरब डॉलर से अधिक की शुद्ध खरीदारी ने बाजार में नई ऊर्जा का संचार किया है। घरेलू निवेशकों के साथ-साथ विदेशी निवेशकों की सक्रिय भागीदारी से बाजार की धारणा में सुधार हुआ है। लंबे समय बाद विदेशी निवेशकों की सकारात्मक भागीदारी ने यह संकेत दिया है कि भारतीय शेयर बाजार एक बार फिर वैश्विक निवेशकों के लिए आकर्षक गंतव्य बनता जा रहा है।